बीच घरक खाम्ह स्त्री

(मैथिली कविता-संग्रह)

कामिनी

नवारम्भ
मधुबनी/पटना/दिल्ली

ऑनलाइन बुक स्टोर www.navarambh.com पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN : 978-93-49867-70-3

बीच घरक खाम्ह स्त्री
(मैथिली कविता-संग्रह)

© कामिनी

प्रथम संस्करण : 2025
मूल्य : 200/-

आवरण : साभार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-5,
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार-847211
पटना : 63, एम.आई.जी., हनुमान नगर, पिन-800020
दिल्ली एनसीआर : प्लॉट एच. एस.-2, ब्लॉक एफ
सेक्टर-अल्फा-2, ग्रेटर नोएडा-201308
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Bich Gharak Khamh Stri
A Collection Of Maithili Poems By Kamini
First Edition : 2025, Price : 200/-

ई पोथी हम अपन दुनू संतान
शुभम आ श्रेयश
केँ
समर्पित करैत छियनि
जिनका प्रति हमर विश्वास अछि जे ओ भविष्यमे
एकटा सद्‌गुणी पुरुष बनि
समाजक सभ स्त्रीकेँ
मान-सम्मान देताह।

कविता-क्रम

13 : बीच घरक खाम्ह स्त्री
18 : अस्मिता
20 : बड़का बात
22 : अट्टहास
24 : आवाज
26 : प्रतिद्वंद्वी
28 : जिम्मेवारी
30 : परिवर्तन
32 : स्त्रीक आँचर
34 : बेरंग जीवनमे रंग
37 : मानसिक दुष्प्रवृतिक बुर्का
39 : झूठ आ सत
41 : संदेशखाली
43 : कौमारे यौवनम् चैव
46 : अधिकार
48 : बेटी हेबाक सुख
50 : प्रतिकार
54 : अहाँक आँखिक नोर
56 : दर्दमे आनन्द केहन
61 : भावी शकीना खातून
64 : परिचित आँखि
67 : स्वयंवर
70 : सीता
72 : अमर्यादित पुरुष
75 : विवाह पंचमी
78 : उपेक्षा
80 : अथाह वेदना
82 : दलित दमित स्त्री

84 : भनसाघरक ओझराहटि
87 : दहशतिमे छौड़ी
90 : कुमारी निराशा
93 : दुर्दशा
94 : पतिव्रता
97 : हमर नेनपन
102 : निमेरा
104 : मोन आब मायासँ मुक्त अछि
105 : चरणामृत
108 : कामना
111 : साक्षी
113 : विषकुंभ पयोमुखम
115 : फैशन
117 : मन
119 : खण्ड-खण्डमे बाँटल स्त्री
121 : पुनर्विवाह
124 : वैध सन्तान
127 : अतीत होइत माय

अपन बात

आइ धरि जतेक विषय पर हम काव्य रचना कयलहुँ अछि, ओहिमे आधा स्त्री विमर्श पर आधारित अछि, आधा अन्य विषय पर। एकर मुख्य कारण समाजमे स्त्री-पुरुषक बीच वैमनस्यता, असमानता तऽ अछिये, हमर स्त्री होयब सेहो एकर मुख्य कारण कहल जा सकैए। स्त्रीक संग जे कोनो घटना-दुर्घटना घटैत अछि, ओकरा पुरुषक आँखि जाहि नजरिसँ देखैत अछि, स्त्रीक आँखि ओहि घटना-दुर्घटनाकेँ ताहि नजरिसँ नहि देखैत अछि। कारण, जखन कखनो कोनो कारणेँ कोनो स्त्री दमित, परित्रासित कोनो अधिकारसँ वंचित होइत अछि तऽ ओ दुःख सम्पूर्ण स्त्री समाजक हृदयमे खंजर जकाँ गड़ि जाइत अछि, जकर दर्द स्त्री समुदाय सहजहि अनुभव करैत अछि। कखनो-कखनो तऽ बिनु कहनहुँ, बिनु सुननहुँ स्त्री, स्त्रीक दुःख मात्र स्त्रीकेँ देखिये कऽ अनुभव कऽ लैत अछि। ओकर बाजब, ओकर चलब, ओकर रहन-सहन, हाव-भावसँ स्त्रीकेँ अनुभव भऽ जाइत छैक, ई स्त्री कतेक दुःखी अछि। कतेक दुर्भाग्य एकर पाछू कऽ रहल छै। केहन वंचनाक ई शिकार भेल अछि।

एकर मुख्य स्रोत अछि स्त्रीक मन। ओकर दुनू आँखि। ओकर हृदय जे बिन कहनहि सुनैत अछि। बिन बजनहि बुझैत अछि। एकरा वैज्ञानिक भाषामे सिक्स सेंस सेहो कहल जा सकैए। यानी छठम इन्द्री जे देखाइत तऽ नहि अछि धरि कोनो दैवीय शक्ति जकाँ चमत्कारिक कार्य करैत अछि अवश्य। बेतारक तार सेहो कहि सकैत छी एकरा जे चौबिसो घंटा जागृत अवस्थामे कार्य करैत अछि। संवेदनशील होयबाक कारणेँ पुरुषक दर्द तऽ ओ अनुभव करितहि अछि, धरि स्त्रीक दर्द ओकरा आरो द्रवित करैत छैक। जेना कोनो अन्य जीवक भाषा, ओकर भाव मनुख अनुमानसँ बुझैत अछि, धरि मनुखक भाषा, ओकर भाव मनुख सहजहि मनुख हेबाक कारणेँ बुझि जाइए। सैह कारण अछि जे हमर रचनाक केंद्र-बिन्दु विभिन्न विषय होइतहुँ, स्त्री विमर्श पर आबिकऽ विश्राम करैए। कहबाक तात्पर्य जे हम अन्य विषय पर कतबहु लिखि लैत छी, धरि जामे

स्त्रीक दुख-सुःख नहि लिखि लैत छी, तामे हमरा शांति नहि भेटैए।

जँ हमरा आँखिक समक्ष वा आँखिसँ दूरो कोनो अन्याय-अत्याचार होइत अछि स्त्रीक संग आ ओहि घटनाक जानकारी हमरा हृदय धरि पहुँचैत अछि तऽ बिना लिखने हम रहिये नहि सकैत छी। कही जे जँ हम नहि लिखब तऽ हमर माथ सहस्त्रो खंडमे विभक्त भऽ जायत। हम भऽ जायब भस्मीभूत प्रतिशोधक आगिमे अपनहि। हम स्त्री छी तेँ दुनियाँक सभ अन्याय सहबाक लेल विवश होयब, एहि बातकेँ हमर मोन ने काल्हि मानलक, ने आइ मनैत अछि। जँ न्याय नहि भेटय तऽ साँसो लेब हमरासँ संभव नहि अछि। न्याय लेल विवश-लाचार होयब सेहो हमरा नीक नहि लगैए। हम मनैत छी अपना लेल हकक बात लोककेँ अपनहि करय पड़ैत छैक। जँ लोक अपना हकक बात करैमे सक्षम नहि रहैत अछि तऽ युग बीति जाइत छैक, जीवन रीति जाइत छैक। पीढ़ी दर पीढ़ीकेँ भोगय पड़ैत छैक एकर दंड, जकर ओ अधिकारी नहि रहैत अछि। एक बेर जखन बच्चा चलनाइ शुरू कऽ दैत अछि तऽ माइयो-बाप छोड़ि दैत छैक ओहि बच्चाक हाथ। तकर बादसँ शुरू होइत अछि ओहि बच्चाक अपन बुद्धि-विवेकक परीक्षा। आगू ओ कोन रस्ते चलत जे ओकरा ठेस नहि लगतैक। ठेस तऽ ठेस, जे लहुलूहान भऽकेँ ओ कतहु जीवनक रेससँ बाहर नहि खसि पड़य। एक डेग, दू डेग, डेगे-डेगे बच्चा समधानिकऽ चलनाइ सिखैत अछि। आ एक दिन ओहनो अबैत अछि जे बच्चा बीच सड़क पर भीड़-भाड़मे दौड़ैत अछि आ सकुशल अपना गंतव्य धरि पहुँचैत अछि। जीवन एकरे नाम थिक जे एकर एलजेबरा सुलझा लेलक से सिकंदर। जे एकर सूत्रमे ओझरा गेल, ओ हारि जाइत अछि, जीवनक रेसमे बीचहि। चाहे स्त्री हो या पुरुष।

स्त्री विमर्श लिखबाक लेल हमर समाज, हमर परिवेश तऽ हमर प्रेरणास्रोत रहबे करैत अछि, जे देशो-विदेशमे बहुतो एहन तरहक घटना-दुर्घटना घटित होइत रहैत अछि जे स्त्री होयबाक कारणेँ हमरा भीतरसँ झकझोरैत रहैत अछि। जहियासँ ज्ञान-प्राण भेल, तहियेसँ ई बात अनुभव कऽ रहल छी हम जे स्त्रीक संग बहुतो जगह बहुतो बिंदु पर एहन तरहक आरोप-प्रत्यारोप कऽ ओकरा एहन कारागारमे कैद कयल जाइत अछि जे दृश्य-अदृश्य, दुनू तरहेँ स्त्रीकेँ तोड़बाक लेल काफी होइत अछि। एखनो स्त्रीक लेल स्त्रीक मान-सम्मान सर्वोपरि होइत अछि, जाहि पर पहिल प्रहार कऽ कोनो समाज

स्त्रीकेँ तोड़बाक पहिल प्रयास करैत अछि। स्त्री कठिनसँ कठिन परिस्थितिक सामना कऽ लैत अछि, धरि जखन बात उठैत छैक ओकर सम्मानक तऽ ओ हारि जाइत अछि। ओकरासँ बर्दास्त नहि होइत छैक जे कियो ओकर चरित्र पर अँगुरी उठबय, कियो ओकरा चरित्रहीन कहय। एकर एकटा उदाहरण तऽ सीतो छथि जतय बेर-बेर अग्नि-परीक्षाक नाम पर हुनका अपन चरित्रक प्रमाण देबाक लेल कहल जाइत छनि आ अपन अमूल्य जीवन हारि जाइत छथि। जाहि धरतीक ओद्रसँ जन्म लेने छलीह, ताहि धरतीक ओद्रमे पुनः समा जाइत छथि। एकटा राजाक बेटी, एकटा राजाक पत्नी, एकटा भावी राजाक माय आ स्वयंमे एतेक सक्षम स्त्री जे एकटा तृण मात्र हाथमे लऽ रावण एहन प्रतापी राक्षसक राजाकेँ स्पर्शहुँसँ रोकि लैत छथि, से एहि तरहेँ जीवनसँ हारि जाइत छथि, से बहुत मार्मिक आ सोचनीय प्रश्न ठाढ़ कऽ जाइत अछि समाजक समक्ष, जे अनुत्तरित अछि आइ धरि। इतिहाससँ वर्तमान धरि पछोड़ करैत अछि ई बात— जखन सीता सन स्त्रीक ओ दुर्गति तऽ सामान्य स्त्रीक कोन गति? आ ई गति स्त्रीक संग-संग आबि रहल अछि एखन धरि। कखनो समूहमे तऽ कखनो एसगरे। जाहि भस्मासुरकेँ शिव वरदान दऽ चमत्कारिक बनेलथि, सैह भस्मासुर शिवक माथ पर हाथ राखि शिवकेँ भस्म करबापर उतारू अछि।

स्त्रीयोक स्थिति लगभग शिवे सन अछि। बिना स्त्रीक तप-त्यागे परिवारक निर्माण असंभव। समाजमे सामंजस्य असंभव। देशमे स्थिरता असंभव। तेँ स्त्रीक माथ पर अनेको भस्मासुर अपन हाथ राखि ओकरा भस्मीभूत करबापर उतारू अछि! स्त्री छिछिया रहल अछि रने-बने, जाहिँ-ताहिँ। एहना स्थितिमे मन हाहाकार कऽ उठैत अछि आ शिव जकाँ अपन त्रिनेत्र खोलि ओहि भस्मासुरकेँ भस्म करबापर उतारू भऽ उठैत अछि। जँ एकटा संवेदनशील मनुखक हाथमे लेखनी नहि हो तऽ समाजमे अस्थिरता उत्पन्न भऽ जायत। प्रतिकारक सभसँ पैघ हथियार बुद्धिजीवी वर्गक लेल लेखनीये होइत अछि आ प्रकृतिप्रदत्त ई शक्ति हमरा भेटल अछि तऽ चुप्प कोना रही। सिपाही मैदानमे युद्ध करैत अछि। गोली-बंदूक चलबैत अछि। लेखक अपन स्टडी-टेबुल पर अपन कलम। अपना-अपना तरहेँ युद्ध दुनू लड़ैत अछि। कियो हारैत अछि, कियो जीतैत अछि। धरि ई हारि-जीत महत्त्व नहि रखैत अछि। महत्त्व रखैत अछि लड़ैक इच्छा

शक्ति, जाहिकेँ बले कोनो मैदान सम्हारल जाइत अछि। कोनो अन्यायक प्रतिकार कयल जाइत अछि। अन्याय-अत्याचारक विरुद्ध प्रतिकारक भावेँ सर्वप्रथम कार्य आ व्यवहारमे आयब सभसँ पैघ बात। बिनु भावेँ कोनो भूमि, चाहे ओ सामाजिक हो, राजनीतिक हो, आर्थिक हो या शैक्षणिक हो, जीतल नहि जा सकैए आ जीतोसँ पैघ होइत अछि कर्म करैक इच्छाशक्ति। गीतामे भगवान श्रीकृष्ण कहैत छथि— कर्मन्येवाधिकारस्ते मा फलेषू कदाचन्, यानी कर्म करैत रहू, फलक चिन्ता हमरा पर छोड़ि दिय। जँ कर्मसँ पहिने लोक फलक चिन्ता करय लागत तऽ कार्य सम्पन्न होयब कठिन भऽ जायत। बहुत एहन कार्य होइत अछि, जाहिमे सफलता-असफलता सुनिश्चित नहि रहैए। एहना स्थितिमे लोकक विश्वास डोलय लागत। लोकमे धैर्य नहि बाँचत आ जाहि कार्यमे विश्वास आ धैर्य नहि हो संग से कार्य सम्पन्न होयब कठिन।

जहियासँ ज्ञान भेल अछि, बहुत दुःख देखलियैक अछि स्त्रीक जीवनमे। एहिमे अपन परिवारोक किछु स्त्री छलीह आ अगल-बगल गाम-देहातक सेहो। पिता जखन चारि वर्षक रहथि तऽ हुनक पिता हुनकासँ छिना गेलनि। मैंयाँ कहैत छलीह— हम सोलहे सालक रही तऽ दुःख पड़ि गेल घरमे कियो अन्य पुरुष नहि शेष। बाबाक भाइ यानी हमर महिनाम वाली मैंयाँक पति सेहो असमये कालकवलित भऽ गेलाह। हुनका तऽ ओहि समयमे कोनो सखा-सन्तान धरि नहि भेल रहनि। जीवन बेरंगे बितलनि। लाल काकी यानी रमौलीवाली काकी तहिये वैधव्यकेँ प्राप्त कयलनि जहिया नेना सभ नेबालके रहनि। एक समय तऽ एहन आयल जहिया परिवारक अधिकांश पुरुष काल-कवलित भऽ गेलाह। घरक स्त्रीगण विधवा, कोनो तरहक कतहुसँ अवलंब नहि रहल शेष। छोट-छोट नेना सभक भूख आ दुःख मेटबै वला कियो नहि। धरि एकोटा स्त्रीकेँ हारैत नहि देखलहुँ कहियो। सभ स्त्री अपन-अपन परिसक जीवनक युद्ध-क्षेत्रमे डँटल। सैह कारण रहल जे घरक सभटा बच्चा पितृहीन भेलाक बादो बिलटल नहि कियो। शिक्षा संस्कारसँ सम्पन्न आपना-अपना हिसाबेँ अपन परिवारक संरचना कयलक। तकरे प्रतिफल अछि जे आइ सभक घर आबाद अछि। सभक नेना अपन-अपन सामर्थ्ये संरक्षित। स्त्री-विमर्शक पहिल बीजारोपण हमरामे ओहिये दिन भऽ गेल रहय। हमर हृदय द्रवित आ व्यथित भऽ

जाइत अछि अपना चारूभरक स्त्रीक दुःख आ संघर्षसँ।

किछु घटना तऽ एतेक अमानवीय जे नेनामे देखलाहा एखन धरि पाछू करैत अछि। अपार दुःख दैत अछि। आँखिक सोझाँ एखनो नचैत अछि ''अक्का'' कानमे सुना पड़ैत अछि एखनो ''अक्काक'' कहरब। अक्का मरै वाली रहय तऽ हम सभक संगे अक्काकेँ देखैक लेल गेल रही। ओहि समयमे हम बच्चे रही। ई अक्का कियो आन नहि, हमरे टोल-परोसक पनिभरनी रहय। ओ दोसरक आँगना-घर नीपि, पानि भरि, खेत-पथारमे काज कऽकेँ अपन जीवन निर्वाह करैत रहय। पाँच सालक जकरा एकटा बेटो रहैक। लोक ओकरा देखि बोल-भरोस दैक— 'की करबहक मनसा बियाह कऽ लेलकऽ तऽ, करऽ दहक। पाँच वर्षक बाद तऽ बेटो कमाइ वला हेतह''। ताहि दिनमे ब्राह्मणसँ इतर निम्न वर्गक धिया-पुता पढ़य-लिखय कमहि, भदोही-पंजाब कमाय-खटाय जाइ नेनहिसँ। ताहि 'अक्काक' चरित्रकेँ मैल कऽ बाबू-भैया लोकनि ओकरा गर्भवती कऽ देलखिन जे कि स्त्रीक स्वाभाविक गुण-धर्म छी। आ अंत समयमे पाड़ामार दवाऽ खुआ गर्भ विनष्ट करय लगलाह। धरि जाहि असह्य पीड़ामे ओ तड़पल से देखलक गामक स्त्रीगण। माय दिस तकैत ओहि नेनाक आँखिक नोर एखनहुँ आँखिमे नचैए हमरा। जँ दुर्गा आ काली सन शक्ति रहितय हमरा लग तऽ सत कहैत छी हम ओहिये दिन संहार कऽ दितियै ओहि सभ पुरुषकेँ जे 'अक्काक' दयनीय स्थितिक लेल उत्तरदायी छल। धरि नहि हम किछु कऽ पेलहुँ आ नहि समाजक बाबू-भैया लोकनि किछु बजलाह। सभ चुप्पे रहल। ब्राह्मणी स्त्रीक स्थिति जतय दयनीय छल ओतय निम्न जातिक स्त्रीकेँ के पूछय!

एहने एकटा चेहरा मोन पड़ैत अछि संयासिनक। गोर अत्ततः। लहुके वयस, मुट्ठियेक डाँड़। उज्जर दप-दप साड़ी पहिरने आबय अँगना। महादेवक नाम पर किछु मँगवाक लेल। माँगिये-चाँगि गुजर-बसर करैत छल। एकर अलाबे कोनो दोसर उपाइयो नहि रहैक ओकरा लग। घर बला मरि गेल रहैक असमये। पेट भरबाक लेल दोसर कोनो रास्ता नहि रहैक। विधवा स्त्रीकेँ परिवार बोझ बुझैत रहय पहिने। से संयासिन कतय कोना निपत्ता भऽ गेल एक दिन, से रहस्य आइ धरि नहि बुझि सकल लोक। सुनबामे धरि एतेक उड़ैत-उड़ैत आयल अवश्य जे गामक किछु बाबू-भैया लोकनि अपन काम-वासनाक शिकार बना मारिकऽ धारक कातमे गारि

देलखिन। नहि कियो खोज-पुछारि कयलक। नहि कोनो थानामे सनहा लिखल गेल। बात बीति गेल। धरि हमर आत्मा पर जे स्त्री होयबाक कारणेँ दगनीक दाग पड़ल से वर्षो बीति गेलाक बादो आइ धरि अछि ओहिना। जँ हम नहि लिखब स्त्रीक व्यथा-कथा तऽ हम जनैत छी, हमरासँ जीवन जीयब कठिन भऽ जायत। हम स्त्री छी तेँ सभ किछु सहब, सभक सभ बात सुनब, एहि बातकेँ हमर आत्मा नहि काल्हि मानलक, नहि आइ मनैत अछि। हम जनैत छी नहि हम देशक मुखिया छी आ नहि एहि समाजक निर्मात्री। हम एक मात्र कवयित्री छी आ हमरा हाथमे जामे धरि ई कलम रहत, हम अपना लेखनीक माध्यमसँ सभ तरहक अन्यायक प्रतिकार करबाक लेल वचनबद्ध छी।

स्त्री विमर्श पर आधारित ई हमर तेसर कविता संग्रह छी। एहिसँ पहिने– ''खंड-खंडमे बटैत स्त्री'' अमावश्यामे दीप सन स्त्री प्रकाशित भेल रहय। जेना कि ओहियो दुनू पोथीमे हम कहने रही जे यथार्थक भाव-भूमि पर रचल-गढ़ल गेल अछि कविता। तहिना एहियो संग्रहक मादे हम यैह कहब जे एहि संग्रहमे संकलित सम्पूर्ण कविता यथार्थक भावभूमि पर रचल-गढ़ल गेल अछि। कल्पनाक कतहुसँ कोनो समावेश नहि। यथार्थे एतेक बेसी अछि जे कल्पनाक गुंजाइस कहाँ रहैए कतहु।

–कामिनी

बीच घरक खाम्ह स्त्री

स्त्री सभ दिनसँ
बीच घरक खाम्ह रहलीह
जाहिपर टिकल रहल
सम्पूर्ण घरक भार
जकरा टुटबाक
जकरा झुकबाक
अर्थ होइत छल
सम्पूर्ण घरक डगमगाहटि
इहो कहि सकैत छी
जे सम्पूर्ण घरक अस्तित्व
दावपर
लागि जाइत छल सहजहि
ई अलग बात
जे स्त्रीक अस्तित्वकेँ
ताहि तरहेँ ताहि दिनमे
नहि स्वीकारल गेल

स्त्रीकेँ
मात्र देह रूपमे
देखल-परखल गेल
पवित्रता-अपवित्रतासँ
नापल-तौलल गेल
स्त्रीयेक हाथक
अन्न-तीमन
खयलाक बादो
स्त्रीयेक अस्तित्वकेँ

नकारल गेल
ओकरा राखल गेल
सभसँ अन्तिम
पौदानपर
जतय अबैत-जाइत लोक
लतखुरदनि करैत रहल ओकरा

ई अलग बात
जे अस्तित्ववान
स्त्रीक अभाव
ताहियो दिनमे
नहि छल
मुदा सामूहिक रूपेँ
स्त्रीक अस्तित्व
अन्धकारमय छल
कही जे असूर्यम्पश्याक
स्थिति रहय
शिक्षा-रोजगारसँ दूर
भोरसँ साँझ धरि
चूल्हि जोड़ब
ओ चूल्हि मिझयबापर
समाप्त भऽ जाइत छल
ओकर दिन
महिना, साल
एहिनाक-एहिना
नहि बसंत अबैत छल
नहि शिशिर
नहि साओन
नहि शरद
मात्र पतझाड़

एक मात्र महिना
एक मात्र समय
सालो भरि

आब से समय
नहि रहल
से बातो नहि रहल
आब बीच घरक
खाम्ह रूपेँ
स्वीकार करय पड़ि रहल छै
लोककेँ
स्त्रीक अस्तित्व
स्त्री देह नहि
सोझ करैत छथि
की त्राहिमाम्-त्राहिमाम्
होमय लगैत अछि
चारू भर
मोने की बेगरते
गोहराबय लगैत अछि लोक
घरक सभ व्यवस्था
संतुलित रूपेँ
चलेबाक लेल
स्त्रीकेँ

चायमे चीनी
कतेक पड़तै
से स्त्री जनैत अछि
तरकारीमे नोन-मशाला
कतेक पड़तै
से स्त्री जनैत अछि

आटा कोना सानल जेतै
जे रोटी फुलतै
से स्त्री जनैत अछि
दूध कतेक आँचपर
औंटल जेतै
जे उधियाकऽ
नहि खसतै
से स्त्री जानैत अछि
बाल-बच्चाकेँ
संतुलित आहार
की देल जेतै
जे जाहिसँ ओ
बीमार नहि पड़तै
से स्त्री जनैत अछि
कोन मादे
कतेक खर्च कयल जेतै
जाहिसँ घरक
सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था
संतुलित रहि सकै
से स्त्री जनैत अछि
लियौन-हकार
लेनी-देनी
कोना की कयल जेतै
जाहिसँ सम्बन्ध
बचि सकय
से स्त्री जनैत अछि
के कतेक बजे सुततै
आ के कतेक बजे उठतै
जाहिसँ
स्वस्थ-सानन्द रहि सकय

सेहो स्त्री जनैत अछि

पुरुष पैसा कमेनाइ
जनैत अछि
मुदा घरकेँ
घर बनाकऽ
कोना राखल
जाइत अछि
से स्त्री जनैत अछि।

अस्मिता

कोनो धर्म
नहि कहैए
जे स्त्रीक अस्मिता
लूटल जाय
धरि स्त्रीक अस्मिता
लूटल जाइत अछि
खाहे ओ स्त्री
सामान्य हो वा खास
राजकुलक हो
वा राजपथक
दानवीय प्रवृति
जखन हावी होइत अछि
मनुखपन
तऽ ओ बिसरि जाइत अछि
स्त्रीक वर्ग
स्त्रीक मर्यादा
ओकरा लेल स्त्री
मात्र देह रूपमे
उपस्थित रहैए
जकरा विद्धोछन करब मात्र
ओकर उद्देश्य

अस्मिताक जखन
चर्चा करब
तऽ पुरुषो कहाँ बाँचत
एहिसँ बाहर

आ स्त्री जँ पुरुषे जकाँ
लूटय लागय
सार्वजनिक रूपेँ
पुरुषक अस्मिता
तऽ मुश्किलमे पड़ि जायत
विश्वक सभ पुरुष

कारण जहिना स्त्रीक लेल
ओकर अस्तित्वसँ जुड़ल
होइत अछि
ओकर अस्मिता
तहिना अस्मिताविहीन
पुरुषोक अस्तित्व
कहाँ रखैत अछि महत्त्व
कोनो देश
कोनो धर्ममे!

बड़का बात

एतेक टाक देशमे
एतेक लोकक बीच
जखन लोककेँ लोक
मारि दैत छै
तऽ ओ बड़का बात
होइत अछि
मरैवला
खाहे स्त्री हो वा पुरुष

एतेक टाक देशमे
एतेक लोकक बीच
जखन कोनो पुरुष
कोनो स्त्रीक आँचरपर
हाथ रखैए
ककरो बहु-बेटीक
दुपट्टा खीचैए
तऽ ओ ओहियोसँ पैघ
बड़का बात होइत अछि

एतेक टाक देशमे
एतेक लोकक बीच
जखन कोनो मानव
दानव भऽ जाइए
आ बेनग्न करैए
ओहि कोखिकेँ
जाहिसँ ओकर जन्म
भेल रहैए

तऽ ई
बड़कोसँ बड़का बात
होइत अछि

एतेक टाक देशमे
एतेक लोकक बीच
जखन कोनो स्त्रीक प्राण
हरण कऽ लेल जाइए
एहि कारणे
जे ओ मात्र
स्त्री रहैए
विस्तृत कोमल
भावभूमिक प्रतिमूर्ति
तऽ ओ बड़कोसँ बड़का
ताहियोसँ बड़का बात
होइत अछि

एतेक टाक देशमे
एतेक लोकक बीच
जखन कोनो
गंभीरसँ गंभीर मुद्दा
महत्त्व नहि रखैए
लोक ओकर संज्ञान नहि लैए
तऽ ओ एतेक पैघ
बड़का बात होइत अछि
जे जकर दूरी
नहि धरतीसँ नापल जा सकैए
आ नहि आकाशसँ
ओ सदैव कलंक बनल
ठाढ़ रहैए
विशाल प्रजातांत्रिक
देशक माथपर!

अट्टहास

हमरा कानमे
सुना रहल अछि
मोछ पर ताव दैत
कौरवक अट्टहास
जे एहि दुआरे खुश अछि
जे एकटा स्त्रीक आँचर
ओकरा हाथमे छै
जकरा जखन चाहय
ओ खीचि सकैए
भरल सभामे
ओहि स्त्रीकेँ
बेनग्न कऽ सकैए

हमरा आँखिक सोझाँ अछि
अपन विवशताक हवाला दैत
पाण्डव पाँचो भाइ
जे सभ किछु देखबा
आ सभ किछु सहबाक लेल
विवश कहैए अपनाकेँ
पितामह तऽ सभ दिन
मौने छलाह
आइ मौन छथि तऽ
कोनो आश्चर्य
नहि लगैए हमरा

द्रौपदी चाहे

राजकुलमे जन्म लिए
वा सामान्य घरमे
हुनका भाग्यमे
भोग्या बनब
विधाता भलेहिं
नहि लिखने होथि
समाज-परिवार
अवश्य लिखि देने छनि

द्रौपदी आर्त्तनाद
करैत छथि
करैत रहथु
बचेबाक लेल कृष्ण
आब नहि एतनि
ओ पहिने नोचल जेतीह
फेर रान्हल-पकायल जेतीह
आ बादमे
बुट्टी-बुट्टीमे बँटाइयो जेतीह
बिन अपराधे!

आवाज

काल्हि रातिमे
टी.वी. पर देखलहुँ
मोमिताक माय आ पिताकेँ
हबोढकार भऽ कनैत
मोमिताक माय कहैत छलीह
''जब भी मेरी बेटी
आवाज देती थी
मैं दौड़ी चली आती थी
अंत समय में भी उसने
मुझे आवाज दी होगी
मुझे पुकारा होगा
पर मैं नहीं सुन पाई''

तखनसँ मोन
बेचैन अछि
मोन तऽ बेचैन
पहिनहुँ छल
जखन सुनलहुँ
मोमिताक विषयमे
मोमिता की जे
देशक कोनो स्त्रीक
ककरो बेटीक विषयमे
एहन तरहक बात
सुनैत छी ने
तऽ मोन बेचैन हुअ लगैत अछि
होइत रहैए
चाहे तऽ अपन माथ

फोड़ि ली
वा ओकरा सभक माथ फोड़ि दी
जे एहन तरहक
जघन्य अपराध करैए
जकर माफी तऽ
जीते-जी
किन्नहुँ नहि भऽ सकैए
होइए जँ सरकार
जागल रहितय
जँ प्रशासन सजग रहितए
जँ देशक नागरिक
जिम्मेदार रहितय
तऽ मोमिताक आवाज
अवश्य सुनितय
मोमिता की जे
बाट चलैत
देशक कोनो स्त्री
अपनाकेँ असुरक्षित
नहि अनुभव करितय

ओकरामे रहितय
आत्मविश्वास
जे कखनो कोनो
विकट परिस्थितिमे
हम आवाज देब तऽ
कियो कोनो कोनसँ
कखनो कोनो मोड़पर
सुनत हमर पुकार
आ झाँपन देत हमरा
अपना आँचरमे ओहिना
जहिना माय दैत छल!

प्रतिद्वंद्वी

भाइ! बहिन कखनहुँ
कोनो स्थितिमे
प्रतिद्वंद्वी नहि होइत छथि
ओ तऽ अपने माता-पिताक
रक्त-मज्जासँ निर्मित
अपने देहक
अंग होइत छथि
जकरा जतेक बेर
अपनासँ दूर करबाक
उपक्रम करबै अहाँ
ओतेक बेर अपनहि
घाहिल होइत जायब

भाइ! बहिन सांवैधानिक तौरपर
पैतृक सम्पतिमे
बरोबरिक हिस्सेदार
रहलाक उपरांतो
एखनो धरि
मोटरीयेक आशपर
विश्वास करैत
ठाढ़ छथि
''एहि पार बहिनि
करुणमे करैत हो ठाढ़
ओहि पार भैया
मोटरीये लेने हो ठाढ़''

भाइ! जहन दुनियाँ
चान आ मंगल पर
पहुँचि गेल
तऽ अहाँ कियै
पाँच सए वर्ष पुरान विचारधाराकेँ
पँजियौने छी
कि जे किछु अछि
से बेटेकेँ हिस्सा
बेटी पंचदेवता सन
काज भेल उपरांत
''सर्वे देवाः स्व स्व स्थानाम् गच्छ''

भाइ! जीवनक
हर एक क्षेत्रमे
जखन परिवर्तनकेँ
अहाँ स्वीकार कऽ रहल छी
तऽ बहिन लेल
अपना हृदयमे जगह
कियै नहि बना
पाबि रहल छी
एना नहि हुअ जे एकदिन
अहाँक उपेक्षा-अपमानसँ
आजिज आबि बहिन
तोड़ि फेकथि
स्नेहक ओ डोर
जकरा कहियो
बड़ मनोयोगसँ
बनेने रहथि।

जिम्मेवारी

एकटा स्त्रीक माथपर
एतेक पैघ जिम्मेदारी अछि
जे ओ चाहियोकऽ
ओकरा दोसरक माथ लादि
सुति रहत चैनसँ
वा टहलिये आओत
हाट-बाजार
से नहि भऽ सकैए

स्त्री जखन फुर्सतियोमे
रहैत अछि ने
तऽ चलैत रहैत छै
ओकर माथ
भोरका चिन्तामे
सँझुका चिन्तामे
रतुका चिन्तामे
अझुका चिन्तामे
कल्हुका चिन्तामे
निश्चिंत तऽ कखनहुँ नहि

एकटा स्त्रीक चिन्ता कयने
निश्चिंत सुतैए
सम्पूर्ण घर-परिवार
आ ई चिन्ता करब
स्त्री छोड़ि नहि सकैए
शनि हो कि रवि

स्त्रीक निश्चिंत सुतने
सुति जायत परिवारक भाग
समाजक अखण्ड व्यवस्था
देशक समुचित विकास
स्त्री जेँ चिन्ता करैए
तेँ सभ व्यवस्था
सुचारू रूपसँ चलैए।

परिवर्तन

झूठे जे कहब
परिवर्तन नहि भेलैए
स्त्रीक जीवनमे
तऽ ई बात
सत नहि हैत
ई सोलह आनामे
सोलहो आना
झूठे हैत

देखियौ जे इतिहास उनटायकेँ
स्त्री कतयसँ यात्रा
शुरू कयलकैए
ओ कालरात्रि जतय
अन्हारे-अन्हार छल
स्त्रीक जीवनमे
आ स्त्री बेवस छल
अन्हारक अढ़मे
अपना ऊपर होइ वला
सभ अत्याचार
सहबाक लेल

ओतयसँ स्त्री
संघर्ष करैत-करैत
आइ एतय धरि
पहुँचल अछि
जतय ओकर
अपन एकटा नाम छै

अपन अलग पहिचान छै
अपन इच्छा-आकांक्षा छै
आ सभसँ पैघ बात
नहि कहबाक अधिकारो छै
तऽ हम कोना कही
किछु नहि बदलल
स्त्रीक जीवनमे
बहुत बदलाव भेल अछि
स्त्रीक जीवनमे
आइ बीच घरक खाम्ह छथि स्त्री
जाहिपर टिकल अछि
घरक सम्पूर्ण व्यवस्था
देश-दुनियाँ तऽ सहजहि
आब ओ समय
नहि रहल
जे पुरुष एकछत्र
राज करताह
बिना स्त्रीक सहमतिये
बिना सहयोगे
किछु नहि अछि संभव

धरि तैयो कहब जे
सम्पूर्ण बदलाव भऽ गेल
स्त्रीक जीवनमे
तऽ इहो सत नहि हैत
किछु बदलाव
एखनो अछि बाँकी
जकर हकदार अछि स्त्री
ओ आइ हुअ वा काल्हि
धरि भऽकेँ रहत एक दिन!

स्त्रीक आँचर

जाहि दिन स्त्री
समेटि लेतीह
अपन आँचर
ताहि दिन
छत्र-छाया विहीन
भऽ जायत सम्पूर्ण सृष्टि
जे वैशाखक
आतप रौदमे
एना ने तापत
जे जड़िसँ जरिकऽ
राख भऽ जायत

ओ तऽ रक्ष रखलनि विधाता
जे स्त्रीक गर्भसँ
उत्पत्ति कयलनि सृष्टिक
जे अभेद्य सुरक्षा कवच बनल
संरक्षित कयने अछि
सम्पूर्ण पृथ्वीकेँ
नहि तऽ निर्माण आ विध्वंस
संगहि चलितय हरदम
ई जे भरल-पुरल
दुनियाँ देखि रहल छी ने
ओ स्त्रीयेक पुण्ये प्रतापेँ

ताहि आँचरकेँ
मैल कहबा आ

मैल करबामे
एकोरत्ती
देह नहि सिहरैए अहाँक
अरे, जाहि कोखिसँ
जन्म लेलहुँ अहाँ
जाहि आँचरक संरक्षणमे
पललहुँ-बढ़लहुँ अहाँ
तकरा एहि तरहेँ
सार्वजनिक रूपसँ
चौबटियापर ठाढ़ भऽकेँ
चिकड़ि-चिकड़ि
कहि रहल छी मैल
कऽ रहल छी मैल
जखन कि अहुँक आत्मा
जनिते हैत
गंगा भेलेहिं
मैल भऽ जाथु
स्त्रीक आँचर
निष्पाप आ निष्कलंक अछि।

बेरंग जीवनमे रंग

बात ई ताहि दिनक छी
जाहि दिन हम
ने नेना रही
आ ने सियान
दुनूक बीच
जे किशोरवय होइत अछि
ताहि अवस्थामे रही
जीवनमे रंग आ उमंगसँ
नव-नव परिचय
लगभग-लगभग
कही जे भेले रहय

सखी-बहिनपाक
बेस नम्हर झूंड रहय
नहि घरक कोनो चिन्ता रहय
नहि दालि-रोटीक
कोनो तरहुत
भोरसँ साँझ धरि
पुरबा-पछबा बसात जकाँ
डोलल घुरी
एहि डारिसँ ओहि डारि
एहि अँगनासँ
ओहि अँगना

ओहि दिनमे होली सतरंगी
आ दिवाली देदीप्यमान होइत छल

लोक जमिकऽ रंग खेलाइत छल
पाँतीक पाँती दीप लेसैत छल
एहनो रंग आ उमंगक समयमे
देखियनि महतुवार वाली काकीकेँ
पढ़िया उजरा साड़ी पहिरने
कात-करोट लागल
परब-त्योहारसँ उखरल-उखरल
ताहि दिनमे नहि बुझी
विधवा आ सधवाक भेद
हुअ कियै एकक जीवनमे रंग अछि
उमंग अछि
आ दोसरक जीवन
कियै एना बेरंग अछि
माय कहैत छलीह
''भरलकेँ तऽ सभ भरय चाहैत अछि
खालीकेँ भरी
से ने भेल बात''

आ ओहि बातकेँ
हम स्मरण करैत
सभ बेर बलजोरी
रंग लगा दैत छलियनि
बाल-विधवा
महतुवार वाली काकीकेँ
जिनका जीवनमे
रंग आ उमंग
छटाक भरि नहि छल शेष
जे सामाजिक कठिन बंधनमे बान्हल
जीवैत छलीह
नीमूधन पशु जकाँ

दुःखक खुट्टासँ बान्हल

काकी सभ बेर कनी डेराइत
कनी धखाइत, कनी लजाइत
अंतमे लगबा लैत छलीह
हमरासँ रंग
आ रंग लगलाक बाद
जे आंतरिक हँसी
फुटैत छल हुनका मुँहपर
से देखबा जोग होइत छल
सत कहैत छी एखनो झलकैए
हमरा आँखिमे ओ हँसी ओहिना
जहिना काल्हि झलकैत छल।

मानसिक दुष्प्रवृतिक बुर्का

बुर्काक विरोध भऽ रहल अछि
होउ, कियैक नहि हैत
हिन्दू सामाजसँ
जखन घोघ
माथसँ निच्चा सरकि गेल
तऽ मुस्लिम समाज
कतेक दिन धरि
एहि बुर्काक बोझ उठौने
चलैत रहत

एक देश आ एक परिवेशमे
असमान धर्मक रहितहुँ
एक रंगक वातावरणक निर्माण
करय पड़ैत छै
बुद्धिजीवी विवेकी लोककेँ
जँ सामान्य वातावरणमे
असमान्य व्यवहार होइत अछि
तऽ मानव सभ्यता
संस्कृतिक क्षरण
तय मानल जाइत अछि
जकर कि गवाह
इतिहास रहल अछि
आइ धरि
जकर परिछाप पड़ैत छै
भविष्य पर
वर्तमान तऽ भुक्तभोगी रहितहि अछि

मुदा किछु चीज
किछु व्यवहार
एहन होइत अछि
जे प्रत्यक्ष तऽ देखबामे
नहि अबैत अछि
धरि परोक्ष रूपेँ
घातक होइत अछि
व्यक्ति आ समाज लेल
ई एहन मानसिक दुष्प्रवृतिक
बुर्का आ घोघ छी
जकर परित्याग आ उपचार
समय रहितहि
जँ नहि कयल गेल
तऽ लाइलाज बिमारी सन
जानलेबा होइत अछि।

झूठ आ सत

हम जनैत छी
एक सए एकमेसँ
अहाँ एकटा सत बजैत छी
बाँकी सए के सए
अहाँ झूठे बजैत छी
झूठे अहाँक कार्य-व्यवहार
आ व्यापार छी
ओहियेसँ फरै-फूलैए
अहाँक खेती-बाड़ी
ओहियेसँ चलैए
अहाँक दुनियाँ

धरि तैयो
हम एहि बातक
पता कहाँ चलय दैत छी अहाँकेँ
जे अहाँक सभटा सत
हमरा पता अछि
अहाँक सभटा झूठ
हम जनैत छी
हम तऽ ईहो जनैत छी
अहाँ आइ की करैत छी
काल्हि की करब
आ परसू की कयने रही

ई जे सए प्रतिशत झूठ अछि ने
ओ एक प्रतिशत सत लग

हारि जाइत अछि
सभ दिन
आ ई एके प्रतिशत
सतक आशे आ विश्वासे
चलैत छै दुनियाँ
एकरहि कान्हपर छै
सृष्टिक सभटा
भार-कुभार
एखनहुँ जे किछु नीक
भऽ रहलए ने एहि धरतीपर
ओ एहिये
एक प्रतिशत
सतक बलेँ
आ जाबे धरि
ई एक प्रतिशत सत
बाँचल रहत
सृष्टिक क्रमबद्धता
बनल रहत
सेहो हम जनैत छी।

संदेशखाली

संदेशखालीमे
स्त्रीक आबरू
लूटल गेल
आ संदेशखाली की
मणिपुरमे कोनो नहि लूटल गेल छल
स्त्रीक आबरू
स्त्रीक आबरू तऽ
देशक हर राज्य
हर क्षेत्रमे लूटल जाइत अछि

लूटैक लेल
स्त्रीक आबरूसँ पैघ
कोनो सम्पत्ति
कहाँ बुझना जाइत छै
कोनो पुरुषकेँ
पुरुष स्त्रीकेँ लूटइयेक लेल
जन्म लैत अछि
स्त्रीक गर्भसँ
माय कहैत छलीह
''जाहि देहसँ देह प्राप्त करब
ताहि देहक विद्धोछन करब''

आ ई स्त्री देहक विद्धोछन
भारतेटामे नहि होइत अछि
इंग्लैण्ड-अमेरिका
रूस-जापान

जतय कतहु स्त्री अछि
जतय कतहु पुरुष अछि
ओ एहि लूटपाटक
हिस्सेदार अछि
एकटा सर्वस्व लूटैत अछि
दोसरक सर्वस्व लूटाइत छै

ई क्रम चलि आबि रहल अछि
सृष्टिक आदियेसँ
आ ई क्रम चलैत रहत
सृष्टिक अंत धरि
हम चंद्रमा पर चलि जाइ
मंगल पर घर बना ली
मानसिक दुष्प्रवृत्तिसँ
पार पायब सहजहि
सम्भव नहि!

कौमारे यौवनम् चैव

नेनपनेमे पढ़ने रही मनुस्मृति
जे काका बड़ सिनेहसँ
देने छलथि
ई कहैत
''की दाय! मोनसँ पढ़िहें
बेर-बेर गुनिहें
हिन्दू धर्मक
आधार छी मनुस्मृति
स्त्रीक गीता छी मनुस्मृति''

आ पढ़ि गेल रही हम
मनुस्मृतिक एक-एकटा श्लोक
अर्थ सहित
मुदा नीक नहि लागल हमरा
काकाक देलहा सिनेह
पाथर सन कठोर जे रहय
लागल मनुस्मृतिक एक-एकटा श्लोक
स्त्रीक सोच आ स्वतंत्रतापर
लोहाक बेड़ी सन गछारल अछि
नेनपनसँ बुढ़ारी धरि
एक मात्र परतंत्रता
स्त्रीक अस्तित्वपर
पुरुष सत्ताक वर्चस्वता
जकरा सोचले मात्रसँ
ठाढ़ होइत छल हमर रोइयाँ
निमाहब तऽ दूरक बात

जे पुरुष
स्त्रीक कोखिमे
दस मास पलैत अछि
स्त्रीक नेहपर
जीवन जीबैत अछि
से स्त्रीक रखवार
''कौमारे यौवनम् चैव''
कियै यौ मनुमहराज
कियै एना कहलहुँ
कोन जन्मक वैर छल स्त्रीसँ
जकर सभटा भड़ास
अपन मनुस्मृतिमे निकाललहुँ

की पत्नी नहि छल
या पत्नीसँ बनैत नहि छल
या भेल छलहुँ कहियो
कोनो स्त्रीसँ उपेक्षित
एहन सोच तऽ सहजहि
नहि आयल होयत
अहाँक माथमे
कोनो ने कोनो कारण
तऽ रहल हैत अबस्से
खैर, जे से
अहाँक सोच
अहींकेँ समर्पित
अहाँक मनुस्मृति अहींकेँ अर्पित
हम तऽ उघारि फेकलहुँ
अहाँक ओढ़ायल
असूर्यम्पश्याक चद्दरि
ओहिये दिन

जहिया अहाँ ओढ़ेने रही
मुदा हमरा नीक नहि लागल
अहाँक ई ईर्ष्या-द्वेष
मोनक उद्‌वेग
कवि छलहुँ तऽ
निष्पक्ष भऽ लिखितहुँ
स्त्री-पुरुषक पाँतीसँ
ऊपर भऽ सोचितहुँ
तखन हम रखितहुँ
अहाँक भावनाक मान

ई की?
सामान्य मनुख जकाँ
जाति-धर्म, वर्ग-सम्प्रदायक
पौती-मौनी बुनैत रहलहुँ
आ बाजार भावेँ
बेचैत रहलहुँ
कनियो नहि सोचलहुँ अहाँ
जे अहाँक बादो
एकर दंश
भोगय पड़तै समाजकेँ
एकर दुःखद भार
उठबय पड़तै निरीह निर्दोष प्राणीकेँ
तहन भारतक संविधान जकाँ
नहि रहत अहाँ लग
दोसर संशोधनक चारा
फेर मानवताक
आर्त्तनाद सुनि
कोन रूप देब
अपन मनुस्मृतिक
यौ मनुमहराज!

अधिकार

हमरा तैंतीस प्रतिशतक
आरक्षण नहि
पचास प्रतिशतक
अधिकार चाही
अहाँक घरमे
अहाँक परिवारमे
अहाँक सर-कुटुम्ब
अहाँक समाजमे

हमरा चाही
अपन अधिकार
सम्पूर्णो मान-सम्मान
जाहि पर चौक मारने
बैसल छी अहाँ
युग-युगान्तरसँ
उपेक्षित-अपमानित
आर कतेक दिन
हम करैत रहब प्रतीक्षा
जे एक दिन अपनहि
ठीक भऽ जाइत सभकिछु

जँ एखनहुँ तक
सड़क पर ठाढ़ कऽ
हमरा निर्वस्त्र करैक
मानसिकतासँ
अहाँ मुक्त नहि भेलहुँ अछि

तऽ ई आरक्षण कखन तक
आ कतय तक
हमर लाजकेँ झाँपन देत
हमरा बीच भँवरसँ
बाहर करत

जँ एखनहुँ तक
एतेक विकासक बादो
हमरा निर्वस्त्र होमय पड़य स्वयं
दोसर पुरुषक समक्ष
पेटक खातिर
पारिवारिक पैघ बेगरताकेँ
भरण-पोषण करबाक लेल
तऽ ई आरक्षण
द्रौपदीक चीर सन
कतेक दिन धरि
हमर रक्षा करत
हमर मान-सम्मानकेँ
सम्हारिकऽ राखत

हम अहाँक भावनाक
सम्मान करैत छी
धरि अहूँ तऽ हमर भाव बुझू
ई उलहन-उपराग देबाक
हमर कोनो उद्देश्य नहि
हम तऽ अपन अधिकार मँगैत छी
अहाँसँ अपन अधिकार चाहैत छी।

बेटी हेबाक सुख

हमर जन्म कहिया भेल
हमरा नहि पता
कतेक ईस्वीमे भेल रहय
सेहो नहि हमरा पता
कोन महिना रहै
सेहो नहि कहि सकैत छी
किछु सुनिश्चित
अपना जन्मक मादे
हमरा बुझले नहि अछि

जखन कहियो पुछने होयब मायसँ
माघ फागुन, चैत, वैशाख
जेठ, आषाढ़, साओन, भादवक बीच
सभ बेर ओकर गणित
गड़बड़ा जाइत छै
एहिमे ओकरो दोष की दी
घरक पैघ जिम्मेदारीक तर
ओ तेना ने फँसल अछि
जे दिन-महिना गानि-गानि
ओ कतेक दिन मोन राखत
''ज्ञातव्य हो जे माय निरक्षर छथि''

से जे से हो हमर जन्मदिन
कोन अंतर पड़ैत छै एहिसँ
असली बात तऽ ई अछि
जे हमरा जन्म लेलासँ

ककरो खुशी भेटल हो वा नहि
''नहिये भेटल होयत
बेटी परहक जे बेटी रही''
धरि हम बहुत खुश छी
अपना जन्मपर
अपना जातिपर
हमरा कहियो दुःख नहि भेल
एहि बातक जे हम बेटी छी

समाजक सहयोग भेटल
वा विरोध
कहियो अपना आपकेँ
एहि बात लेल नहि दोष देलहुँ
जे हम बेटी छी
तेँ हमरा संगे
एहन तरहक घटना वा दुर्घटना
घटित भऽ रहल अछि
एतय धरि जे
विवाहसँ पूर्वे
हमर इच्छा छल
पहिल सन्तान हमर
बेटिये हुअ

जँ आगुओ
पुनर्जन्म होइत हुअ
तऽ हम यैह इच्छा रखैत छी
पुनः बेटिये बनि
जनमैत रही हम
नहि एहिसँ एकरत्ती कम
नहि एहिसँ एकरत्ती बेसी।

प्रतिकार

पहिल प्रतिकार कयने रहथि
मछैता वाली मैंञा
कमल बाबाक गारि-मारिसँ
आजिज आबि
खापड़िसँ हुनक चानि तोड़िकऽ
दाँते आँगुर कटने रहय
पूरा गामक लोक
नगर-नगर भऽ गेल रहय सोर
''फल्लाँ जीक भावहु
खापड़िसँ हुनक चानि तोड़ि देलकनि''
लाजे कमल बाबा
कतेक दिन तक लोकसँ आँखि
नहि मिला सकलाह
एहि बातक निन्दा
तऽ जे भेल से भेवे कयल
धरि एकटा नीक बात
भेल अवश्य
जे ताहि दिनसँ
कमल बाबाक हाथ
आ जुबान
सम्हरि गेलनि
ओ बात-बातपर
जे बाबीकेँ
गारि-मारि देबाक आदति छलनि
से छुटि गेलनि
किछु लोक लाजे

किछु अपने मारिक डरेँ

दोसर प्रतिकार कयने रहथि
ढेंगहा वाली काकी
अपना गजाबी-शराबी
घरवलाकेँ
झाड़ूसँ झाड़िकेँ
आखिर कतेक दिन तक
बर्दास्त करितथि
रोजक रोज
एके धंधा
साँझहि काका पीबिकऽ मतंग
बतहपनीक सभ बान्ह तोड़ैत
काकीक कुल-खानदानकेँ
जे उकटैत छलखिन
से तऽ उकटिते छलखिन
अरोसी-पड़ोसीक जान
सेहो नहि बकसैत छलखिन कका
दस हजारकेँ गारि
पढ़ैत रहैत छलखिन लोककेँ
भारी विपत्तिमे रहलीह काकी
घर सम्हारती की पर
एक दिन धैर्यक बान्ह टुटि गेलनि
तऽ बेसम्हार भऽ गेलीह
कका पर
मारि खेलाक बाद
जखन नशा उतरलनि
तऽ खूब कनलाह काका
एतेक कनलाह
जे सुखायलो नदीमे

नाव चलय लागल
ताहि दिनसँ शराब के कहय
जे माछो-मासु बारि देलाह ओ
आब ककाक गरदनिमे
दू धारीक वैष्णवा कंठी
बान्हल अछि
आ ओ भऽ गेल छथि
व्यापक लोक

तेसर प्रतिकार कयलथि
कन्हौली वाली भौजी
भैयाकेँ चप्पलसँ मारि
की करितथि
एकोटा रास्ता
नहि छोड़लखिन भैया
जाहिसँ भऽकेँ
भौजी बाहर निकलि सकितथि
अपन मान-सम्मान
बचा पबितथि
सुख-सेहन्ताकेँ
सम्हारि सकितथि
''बेटी स्वर्गे नीक
की बेटी ससुरे नीक''क
जे थप्पा मारि देल जाइत छै
बेटीक माथपर
ओ बड़ भारी पड़ैत छै तखन
जखन सासुर
मनोनुकुल नहि भेटैत छै ओकरा
सासु नहि मान दै तऽ चलत
ससुर अपमानित करय

तैयो रहल जा सकैए
धरि जखन घरवला
भऽ जाइ क्रूर-कठोर, चरित्रहीन
तऽ नहि रहल जाइत छै
सैह भेलनि भौजीयोक संग
भैयाकेँ सभ स्त्री संसारक
सुन्दर गुणवती देखाइत छलनि
आ भौजी सभसँ खराब
सभसँ कुरूप
एतेक धरि तऽ
बर्दास्त कयलीह भौजी
मुदा बर्दास्तसँ बाहर
भेलनि तहिया
जहिया परस्त्रीगमण
करय लगलाह भैया
भौजी– ''एटेम्प्ट टू मर्डर''क
भूमिकामे जा
तामे तक मारैत रहलखिन भैयाकेँ
अपना पैरक चप्पल खोलि
जामे तक ओ थाकि नहि गेलीह
ताहि दिनसँ भैयाकेँ कानबे
ताल-पोखरि भरैए
सभकेँ कहने घुरैत छथिन
''कोन जन्मक पाप केलहा छल
जे घरवालीक हाथे मारि खेलहुँ''

एकटा स्त्री
जखन प्रतिकारपर उतारू होइए
तऽ संसारक सभ लोक-लाज
कात भऽ जाइए।

अहाँक आँखिक नोर

सत पूछी तऽ
हमरा अहाँक आँखिमे नोर
नीक नहि लगैए
जखन कि हम जनैत छी
आँखिमे नोर आयब
कोनो कमजोरी नहि
सहृदयताक लक्षण थिक

धरि तैयो
जखन कखनो देखैत छी
अहाँक आँखिमे नोर
हम भीतरसँ
टूटय लगैत छी
लगैए हमरा समक्ष
जे मजबूत पहाड़ ठाढ़ छल
नीक-बेजाय सभ लग
कखनो हमर संगो निमहबैत
तऽ कखनो रस्तो रोकैत
से मौसमी झंझाबातमे
भखरय लागल अछि सहजहि

बात-बात पर नोर
तऽ हमरा आँखिसँ बहैत छल
जकर हँसी उड़बैत
कहैत छलहुँ अहाँ
''हइए, आब बहऽ लगलनि

आँखिसँ
गंगा-यमुनाक धार
भावनासँ जीवन नहि चलै छै
मजबूत करू अपनाकेँ''
से मजबूती
कतऽ गेल अहाँक
अहाँ तऽ
पाथर सन कठोर छलहुँ
जे पटकलो पर
नहि फुटैत छलहुँ
जकरापर
सर्दी-गर्मी
पानि-पाथरक
नहि पड़ैत छलै
कोनो प्रभाव
से फूल सन कोमल
कोना भऽ गेलहुँ
जे कनिको रौद-बसात
नहि लगैए
कि मौलाय लगैत छी सहजहि!

दर्दमे आनन्द केहन

बात चौबीस साल पहिलुका छी
नव-नव विवाह भेले रहय हमर
आ हम पवनैतिन रही मधुश्रावणीक
नित भोरे उठी आ संगी-सहेली संगे
फूल तोड़य जाइ
डाली भरि-भरि फूल तोड़ी
बेली, चमेली, चम्पा, अड़हुल
कनैल, गुलाब, वैजयंती
कही जे जतेक रंगक
आ जतेक तरहक
फूल भेटय फुलबारीमे
लोकक दलान-बथानमे
कोनटा-फरकामे
गली-कुची, एम्हर-ओम्हर
जतय-ततय एको जगह
नहि छोड़ी
आ चंगेरा भरि-भरि राखी
कोबर घरमे

दिन बीतय फूलक देख-रेखमे
आ मधुश्रावणीयेक कथा-वार्ता सुनैत
फेर दुपहरिये विदा होइ
संगी-सहेली संगे
फुललोढ़ी करय
बटगबनी गबैत
''चैत हे सखी चित भेल चंचल

यौवन भेल जीवकाल यौ
पिया परदेशिया, रामा
ओतही गमाओल
हम धनी वारी वयस यौ''
अनेक तरहक बटगबनी
जाहिमे कन्त, पाहुन, पिया
लगभग-लगभग रहिते छलथि
एकटा हमरा टोलमे
गबैया बाबा रहथिन
एहि 'पिया' शब्द पर
ततेक खौंझेथिन से पुछू नहि
कहथिन– हऽ हऽ आगि लगबैए
आइ-काल्हिक छौड़ी सभ
बियाह भेल नहि कि
पिया-पिया करय लगैए''
गबैया बाबाक डर तऽ
सभकेँ होइत छलै अवश्य
धरि हुनक खीझपर
लोक हँसबो खूब करैत छल
तेँ हुनका दलान लग अबितहि
आरो जोर पकड़ि लैत छल
गीतक स्वर

कहियो फुललोढ़ी
फुलबारीमे होइत छल
कहियो महादेवक मंठपर
कहियो विषहरि थान
तऽ कहियो-कहियो
हम सभ लगपासक
दोसर गाम

सेहो चलि जाइत रही
एहि तरहेँ गामो घुमि ली
आ फुललोढ़ियो भऽ जाइ
कहियो-कहियो तऽ इन्द्र भगवान
ततेक दहीन भऽ जाथिन
जे हम सभ
तीतैत-भीजैत
घर घूरी
तैयो प्रसन्नतामे कोनो कमी
नहि आबय किन्नहुँ
कही जे
जीवनक ओ चौदह दिन
स्वर्णकाल रहय
नवविवाहितक लेल

सभसँ कठिन घड़ी
आबय पन्द्रहम दिन
जहिया टेमी पड़य
सुनिश्चित रहय पहिनेसँ
कही जे मोनमे
एकटा डर
घर कयने रहय
पंचमीये दिनसँ
ओ लह-लह करैत टेमी
आ सुकोमल शरीरक चमड़ी
जकर साक्षी रहैत छल आँखि
नेनहिसँ
टेमी पड़ितहि
बरबराकऽ फूटैत छल फोंका
जकरा नहि फुटैत छल फोंका

ओकरा लेल
अनेक तरहक अंधविश्वास
पसारने छल लोक
तेँ दर्दमे लोक तकैत छल आनन्द

मुदा हमर मोन
एहि टेमीकेँ
नहि मानलक
कतबो तकलहुँ
दर्दमे आनन्द
हमरा कतहु नहि नजरि आयल
हमरा लागल
अंधविश्वासक अढ़मे
स्त्रीकेँ दागल जाइत अछि
बिनु अपराधे
आ हम टेमी लेबा आ देबाक
घोर विरोध कयलहुँ
मधुश्रावणीक पूजेपर
हमरो विरोध कम नहि भेल
लोक दाँते आँगुर काटय
''हऽ हऽ एहनो कतहु भेलैए
बिनु टेमीक कतहु
मधुश्रावणीक पूजा सम्पन्न होइ
आरो पढ़बथुन बेटीकेँ
बाहरमे राखि
यैह सभ ने अत्ततः करतनि''
मुदा हम दृढ़प्रतिज्ञ रहलहुँ
टेमी नहि लेब तऽ नहि लेब
चाहे विरोध हुअ
वा समर्थन

लोक सभ आत्मसन्तुष्टि लेल
शीतल टेमीक प्रयोक कऽ
कहुना मधुश्रावणीक विध
सम्मन्न कयलथि
एहि तरहेँ हमर
मधुश्रावणीक पाबनि सम्पन्न भेल

आब ताहि दिनसँ
हमर गाममे कियो सजग सोहागिन
नहि लैत छथि मधुश्रावणीक टेमी
आब शीतल टेमीक प्रयोग कयल जाइत अछि
कोनो प्रथा-कुप्रथाकेँ
जड़िसँ समाप्त करबाक लेल
मात्र मौखिक विरोध
नहि होइत अछि कारगर
ओहि लेल जमीनपर
उतरय पड़ैत छै
पहिल डेग अपनहि उठबय पड़ैत छै
पहिल आवाज अपनहि देबय पड़ैत छै।

भावी शकीना खातून

बस अपना गतिये
भागि रहल अछि
आगू-आगू
जतेक धरि ओकर सामर्थ्य छै
आ जाहि तरहक ट्रैफिक रहल
तकर भीतरे
सभक सभ गंतव्य स्थल
भऽ सकैत अछि
मुदा बसक गंतव्य-स्थल
निर्धारित छै पूर्वहिसँ
पटनासँ दरभंगा
दरभंगासँ पटना

हमहुँ बैसल छी
एहिये पटना-दरभंगा वला बसमे
आ हमरो गन्तव्य सुनिश्चित अछि
पटना आ दरभंगाक बीच
मधुबनीमे
हमरा संग-संग
अनेक यात्री
हमर सहयात्री भेल अछि
ताहिमे अबैत अछि
एकटा शकीना खातुन सेहो
जे हमर सामने वला सीटपर
बैसल अछि
प्रचंड गर्मीक बादो
बुर्कासँ झँपने

अपन सर्वांग शरीर
मात्र दूटा आँखि छै
बुर्कासँ बाहर
जे बाहरी गतिविधि
चलेबाक लेल
छोड़ि देल गेलैए
बुर्काविहीन
शकीना खातूनक कोरामे छै
दू-अढ़ाइ सालक
एकटा कनटिरबी
जे सामान्ये नेना जकाँ लगैए
एकटा छोट-छीन फराक पहिरने
उछल-कूद करैत
एहि कोरासँ ओहि कोरा
शकीना खातूनक बगलमे
बैसल अछि शकीनाक शौहर
मुहम्मद हुसैन
जे शकीनाक
सभ गतिविधिपर
नजरि रखने अछि
जे ओकर सभ
छोट-पैघ आवश्यकता
पूर करैत अछि

कखनो रामदाना
तऽ कखनो पाकल केरा वला
अबैत अछि
ओ नान्हिटा नेना
हाथक इशारासँ
ले-ले, ले-ले करैत अछि
मुहम्मद हुसैन

जेबीसँ पाइ निकालि
रामदाना आ पाकल केरा
कीनैत अछि
जकरा शकीना खातून
ओहि नेनाकेँ खुअबैत अछि
आ नेना खेनहियो जाइत अछि
टुप-टुप, टुप-टुप
मुँह तऽ झाँपल अछि
बुर्कासँ शकीना खातूनक
धरि आँखिमे प्रसन्नताक भाव
देखाइत अछि सहजहि हमरा
ओ नेना खाइत अछि
खेलाइत अछि
आ फेर सुति रहैत अछि
माइक कोरामे
निश्चिंतक निन्न

सोचै छी
केहन एखन ई नेना
धर्म-जाति बंधनविहीन
हँसि-खेला रहल अछि
एहि कोरासँ ओहि कोरा
जखन ई युवती होयत
एकरो पैरमे
बान्हि देल जेतै
यैह सभ जंजीर
जाहिमे ओकर माय
बान्हल अछि
प्रचंड गर्मियोमे
बुर्कहिसँ झाँपल अछि।

परिचित आँखि

बाबा विश्वनाथक
विशाल परिसरमे
जतय उमड़ि पड़ल छल
असंख्य भक्तक भीड़
जतय कही जे
हजार व्यवस्थाक बादो
साँसो लेबा जोग हवा
कम पड़ि रहल छल
आ व्यवस्थेक अन्तर्गत
कऽ देल गेल रही
हम-अहाँ
अलग-अलग
स्त्री आ पुरुषक पाँतीमे
दूर-दूर
जतयसँ नहि अहाँ हमरा नजरि आबी
आ नहि हम अहाँकेँ
ओहि असंख्य भक्तक भीड़मे
के कतऽ अछि
तकर कोनो अता-पता नहि

सोझाँमे त्रिकालदर्शी
बाबा विश्वनाथ रहथि
आ संगमे
असंख्य भक्तक भीड़
धरि तैयो
मोन व्याकुल आ बेचैन

भऽ उठल
अहाँसँ घन्टा-दू घंटा
दूर होइतहि लागल
एतेक लोकक रहितहुँ
हम असगर छी

हमर आँखि
ओतेक अपरिचित
आँखिक संगमे रहितहुँ
ताकय लागल
अहींक परिचित आँखिकेँ
आ बाबा विश्वनाथसँ पहिने
होमय लागल
अहींक दर्शन करी हम
''आब ई बात सोचैत छी
तऽ लाज लगैए
बाबो की सोचने हेताह
केहन भक्त अछि ई
भगवानसँ पहिने
पतिकेँ तकैए''
धरि ई बात तऽ
सत छी
सोलह आना सत
जे जिदपर उतारू भऽ
अहाँकेँ ताकिये लेलक
सभ व्यवस्थाकेँ
धकियाइये देलक
आ अहाँ हमरा समक्ष अयलहुँ
आ हम अहाँक समक्ष

ओ एक पलक
जे अनुभूति छल मिलनक
ओ सभ भीड़
सभ व्यवस्थाकेँ
अनदेखा करैत
गंगा-यमुनाक संगम सन
हमरा आजीवन
मोन रहत।

स्वयंवर

जँ स्वयंवरक प्रथा
रहितय हमरा युगमे
तऽ सत मानू
हम तऽ नहियें
वरण करितहुँ अहाँकेँ
वरण तऽ दूरक बात
आमंत्रणो नहि दितहुँ
अहाँकेँ
अपन स्वयंवरक लेल

ओ तऽ विवश रहथि पिता
अपन अविवाहिता
पुत्रीक चिन्तामे
तेँ वरण कऽ लेलहुँ
अहाँकेँ
आ बैसि गेलहुँ
वेदी तर
मुँह-कान झँपने
बिना अहाँक मुँह देखने
आ भरि देलहुँ अहूँ
हमर सीथ सिनूरसँ
बिना हमरा देखने

ओ युगे किछु एहने छल
जतय जीवनक
महत्त्वपूर्ण निर्णय

लेबाक अधिकार
नहि छल संतान लग
माय-बाप जे करथु
जे सोचथु
ब्रह्माक लकीर
मानल जाइत छल
ताहि दिन
जकरामे
कोनो संशोधनक प्रावधान
नहि रहैत छल केम्हरोसँ
हँसिकऽ कि कानिकऽ
ओहिये बाटे चलनाइ अछि
ओकरे भऽकेँ रहनाइ अछि

आ हम रहि रहल छी
पुरे पच्चीस सालसँ
अहाँ लग
हँसिकऽ कि कानिकऽ
वेदी तरहक
ओहि पवित्र अग्निक समक्ष
जे वचन लेने रही
जीवन भरि संग
निमहेबाक
तकरा स्मरण कऽकेँ
कुलदेवता, ग्रामदेवता
आ पंचदेवताक आशीर्वादेँ

आगुओ भगवतीसँ
आशीष मँगै छी
आब एहि जीवनक

पार-घाट
अहीं लगाबी
अहीं बनी एहि जीवनक
नैयाक खेबैया
आसान तऽ नहि अछि
ई यात्रा से हम जनैत छी
धरि एतबो दुरुह नहि
जे बीचेमे बाट बदलि ली
अपन-अपन वंशी
अपन-अपन राग बजाबी।

सीता

हमरा हृदयमे
जाहि सीताक छवि
नेनहिसँ वास करैत अछि
ओ से नहि मात्र
राजा जननक सुपुत्री छथि
नहि राजा रामक सहधर्मिणी
नहि मात्र मिथिलाक धिया
नहि केवल लव-कुशक माय
ओ सम्पूर्ण स्त्री जातिक
अस्मिताक प्रतीक
भारत भूमि भरत खण्डक
एकमात्र स्त्री छथि
जिनकासँ प्रेरणा लऽ
पलैत-बढ़ैत अछि
एतहुका स्त्री

सुखमे सीता
दुःखमे सीता
हर्षमे सीता
विषादमे सीता
हारिमे सीता
जीतमे सीता
जीवनक हर रीतमे सीता
सीता-सीता, सीता-सीता
जतहि देखू
ओतहि सीता
मन-प्राणमे

समाइत सीता

प्रत्येक स्त्री एतहुका
अपना आपमे
समाहित कयने अछि
एक-एकटा सीता
जे खराबसँ खराब
परिस्थिति लग
झुकैत नहि अछि
डरसँ मुँह मोड़ैत नहि अछि
जे अपन कर्मकेँ
अपन धर्म मानैत अछि
जे नहि राजमहलक ऐश्वर्यसँ
इतराइत अछि
जे नहि वनक दारुण दुखसँ डेराइत अछि
जे कुशल गृहिणीक संग-संग
कुशल योद्धा बनि
पराजित करैत अछि
विपरीत परिस्थितिकेँ
आ सामने जँ
सुमेरुओ अबैत अछि
तऽ चूर-चूर करैत अछि
ओकर घमंड
आ बढ़ैत चलि जाइत अछि
आगू-आगू, बस आगू
पाछू नहि मुड़बाक लेल
घुरि नहि पुनः देखबाक लेल
भलेहिं चक्रवर्ती सम्राटे
कियै नहि दैत होथि आवाज
करैत होथि सीताक लेल
पुनः विलाप!

अमर्यादित पुरुष

सीता जँ लक्ष्मण-रेखा
पार नहि करितथि
तऽ शायद सीता अपहरण सन
अमर्यादित घटना
नहि घटितय
शायद रावणो संग युद्ध
नहि होइतय
सहस्त्रो-सहस्त्र
जे निरीह-निर्दोष जीव
मारल गेल
से शायद बचि जइतय
प्राकृतिक सुन्दरतापर
जे ग्रहण लागल
जकर क्षरण भेल
एकटा विकराल युद्धसँ
सेहो अक्षत रहितय ओहिना

बहुत किछु
रहि सकैत छल ओहिना
अपन प्राकृतिक अवस्थामे
सीता जँ लक्ष्मण-रेखा
पार नहि करतथि
आब सवाल उठैत अछि
सीता लक्ष्मण-रेखा
कियै पार कयलनि
ककरा कहला पर कयलनि

ककरा लेल कयलनि
एहि सभ प्रश्नक
एके उत्तर अबैत अछि पुरुष
ओ पुरुष
जे चाहे तऽ सम्बन्धमे
स्त्रीक पति भऽ सकैए
ओ पुरुष
जे चाहे तऽ सम्बन्धमे
स्त्रीक पुत्र भऽ सकैए
या ओ पुरुष
भाइये कियै ने हो
स्त्री अपनासँ ऊपर
रखैत अछि
अपन सभ सांसारिक सम्बन्धकेँ
आ ओहि सम्बन्धक
सुरक्षा खातिर
अपन जान लगा दैए
स्त्री बिसरि जाइए
अपन सभ सुरक्षा घेरा
जे सुरक्षित राखि सकैत छल ओकरा

एकटा पुरुष
स्त्री लेल
लक्ष्मण-रेखा खीचैत अछि
एकटा पुरुष
ओहि लक्ष्मण-रेखाकेँ
पार करबापर
स्त्रीकेँ विवश करैत अछि
आ एकटा पुरुष लेल
स्त्री स्वयं विवश अछि

लक्ष्मण-रेखा पार करबापर
एहि सभक केन्द्रमे अछि
पुरुष! पुरुष!! आ मात्र पुरुष
आ रावण सन अमर्यादित पुरुष
बिसरि जाइए सभटा मर्यादा
एकटा स्त्रीक अस्मितापर
सीता हरण सन
बहुत पैघ प्रश्न-चिन्ह ठाढ़ कऽकेँ
जकरा नहि इतिहास स्वीकारलक
आ नहि वर्तमान स्वीकारत
भविष्य तऽ अपन रस्ता अपने तय करत
सेहो सुनिश्चिते अछि।

विवाह पंचमी

आइ विवाह पंचमी छी
आ विवाह पंचमीक
मतलबे होइत अछि
सीता विवाहक दिन
जहिया पूर्ण भेल रहनि
जनकजीक प्रतिज्ञा
सुनैनाक मनोरथ
मिथिलावासीकेँ
सीता विवाह देखबाक लालसा
जखन शिवधनुष पर
प्रत्यंचा चढ़ेनिहार
वीर पुरुष
नहि भेटल हेतनि
जनकजीकेँ
तऽ कतेक उहापोहमे
हेताह ओ
की करी आ की नहि
सियान बेटीक
विवाहक चिन्ता
एखनो होइत अछि
लोककेँ
दूरसंचार क्रांतिक बादो
आ ताहि दिनमे
जखन कि आइ जकाँ
ने यातायातकेँ
एतेक सुविधा छल

आ ने त्वरित मैसेंजरक
तेहन व्यवस्था
चिन्ते घुलैत हेताह ओ

माय सुनैनाक
व्यथाक अनुमानो
सहज नहि
बुझाइत अछि हमरा
भलेहि सीता
कोखिजाया बेटी
नहि छलीह हुनक
धरि रक्तो सम्बन्धसँ
बढ़िकेँ होइत अछि
सम्वेदना-सद्भावक सम्बन्ध
जे अन्त-अन्त धरि
बनल रहैत अछि
मनुखक हृदयमे

से सीता दाइक विवाह
जखन भेल होयत मिथिलामे
राम चढ़ेने हेताह
शिवधनुष पर प्रत्यंचा
आ पूर्ण भेल होयत
जनकजीक प्रतिज्ञा
तऽ मिथिलावासीक
हर्षक अनुमान
सहजहि लगाओल
जा सकैए
कतेक अले-दले
सम्पूर्ण भेल होयत विवाह

तकर तऽ पूर्ण जानकारी
रामचरित मानस पढ़लाक बादो
नहि प्राप्त कयल जा सकैए
तहन तऽ अनुमाने मात्र आधार

से सीता
जखन रने-बने छिछिएलीह
बेर-बेर अग्निपरीक्षा देलीह
तऽ लोक मानय लागल
विवाह पंचमीक
दिने ई अशुभ छल
तेँ परित्याग कयल गेल
ई दिन
विवाहक लेल
लोक आब एहि दिनकेँ
नहि रखैत अछि
अपना शुभ दिनमे
नहि करैत अछि
मिथिलाक लोक
अपन बेटीक विवाह
विवाह पंचमीकेँ !

उपेक्षा

राम बहुत उपेक्षित
कयलनि सीताकेँ
बेर-बेर दंडित
परित्रासित कयलनि
अग्निपरीक्षा सन
असहनीय परीक्षा
कोनो जीवक लेल
भारी कठिन होइत अछि
सेहो लेलनि

एक बेर जे लेलनि
से तऽ लेबे कयलनि
दोसरो बेर मंसूबा
सैह छलनि
ओ तऽ सीते छलीह
जे एहन अन्याय दुबारा
सहबासँ नकारि देलीह
बहुत निन्दा
एहि बातक
ताहि दिनमे जे भेल
से तऽ भेवे कयल
आइयो धरि निन्दनीय
बनल अछि ई विषय
आगुओ एकर निन्दा
कम नहि होयत
से हम जनैत छी

धरि धर्मरक्षक जनक
जानकीक पिता
एहि बातक विरोध करैत
कतहु नहि देखाइत छथि हमरा
या एहन विपत्तिक घड़ीमे
सीताक संग देबाक लेल तत्पर
कोनो सामान्यो पिताक भूमिकामे
जनक जीवनक रंगमंचपर
नहि उपस्थित होइत छथि
जखन कि आत्मस्वाभिमानी रूपमे
जनकक चर्चा
बहुतो जगह सुनल पढ़ल

ई परम्परा एखनो धरि
स्थापित अछि मिथिलामे
विवाहिता बेटीक
दुःखसँ सरोकार
नहि रखैत अछि परिवार
मरल पिता-पितामहक कर्म
साले-साल करब
भलेहि नहि बिसरथि ओ
बियाहक बाद बेटीकेँ बिसरनाइ
आम बात छी
हुनका लेल।

अथाह वेदना

सम्पूर्ण रामायणमे
जतेको काण्ड अछि
जतेको घटना-दुर्घटना अछि
जतेको किस्सा-पिहानी अछि
ओहि सभमे
जतय आबिकऽ
हृदय विदीर्ण होइत अछि
ओ छी
सीताक पुनः धरतीक ओद्र
वरण करब

ई सोचि-सोचि
मन विचलित होमय लगैत अछि
कहू जे कतेक अथाह
वेदनामे आबि
सीता पुनः
धरतीक ओद्र
वरण कयने हेतीह
जखन कि दू-दूटा नेना
सर्वगुण सम्पन्न
समक्ष ठाढ़ हेतनि
राम सन चक्रवर्ती सम्राट पति
राज सिंहासनपर विराजमान
कौशल्या-सुमित्रा-कैकेयी सन
वर्चस्वशाली सासु
चारू भरसँ घेरने हेतनि

सम्पूर्ण अयोध्याक प्रजा
निर्णयक प्रतीक्षामे
प्रतीक्षातुर भेल
धैर्य धारण करबामे
असमर्थ होयत
आ व्याकुल-बेचैन भऽ
सीताक मुँह निहारि रहल होयत
ओहि घड़ी सीता कहने हेतीह
''हे धरती फाटू
जल्दी फाटू
जे अहाँक ओद्रमे पुनः
हम समा जाइ''
जतेक सहज लगैत अछि
ओतेक सहज
अछि नहि ई बात
स्त्री अपन सन्तान लेल
अपन पति लेल
अपन परिवार लेल
जतय स्वर्गोंकेँ नकारि दैत अछि
ओतय समाज-परिवार
आ पतिसँ प्रताड़ित भऽ
ततेक ने टूटि जाइत अछि
तहे-तहे
जे जीबाक इच्छे
जेना समाप्त भऽ जाइत छै
आ सीता पहिने
एकटा स्त्री छलीह
तखन कोनो राजाक बेटी
कोनो राजाक पत्नी
कोनो सम्राज्यक साम्राज्ञी।

दलित दमित स्त्री

हम मनैत छी
सीता छलीह
सक्षम स्त्री
जे नितांत असगर
भेलाक बादो
अपन आ अपन नेनाक
लालन-पालन करैमे
कहियो लड़खड़ेलीह नहि
हाथ नहि पसारलीह
कहियो ककरो लग
लाख झंझावात आयल
ओ हारय नहि देलीह
अपन स्वाभिमानकेँ
नृप पिता आ नृप पतिक अछैत
ओ! ओ सभ दुःख भोगलीह
जे एकटा सामान्यो
स्त्रीक लेल असह्य मानल
जाइत अछि

ताहि सक्षम स्त्री सीताक लेल
ई समाज
ई परिवार
की कयलक
जकरा मानवक विकास
आ संरक्षण लेल
अहम मानल जाइत अछि

आश्चर्य तऽ तखन लगैए
जखन तीन-तीनटा
वर्चस्व वाली स्त्री
जे सम्बन्धमे
सीताक सासु लगैत छलीह
एकदमसँ चुप्प भऽ जाइत छथि
सीताक सभ दुर्दशापर
अपना घरक
सभ न्याय अन्यायपर
या राजनीतिमे
हुनक स्थिति
दयनीय छल
ईहो पता लगायब आवश्यक
वा एक स्त्रीक
दुःख-दर्दसँ
दोसर स्त्रीकेँ
कोनो अन्तर
नहि पड़ैत छल
सेहो पता लगायब आवश्यक

पता तऽ ईहो लगायब आवश्यक
की आमसँ खास धरि
पूर्वसँ आइ धरि
धरतीसँ चन्द्रमा धरि
पदार्पण भेलाक बादो
स्त्री दमित दलित
कियै छथि?

भनसाघरक ओझराहटि

बात कोनो तेहन नहि अछि
जे कहब तऽ खुशी होयत
बात एहनो नहि अछि
जे हम चुप्प रहि जाइ
बात एकदम सामान्य
बात एकदम खास अछि

बात पर बात चलल
तऽ हम अपन बात कहैत छी
ई बात ने स्कूल-कॉलेजक छी
ने ई बात नौकरी-चाकरीक
ई बात कोनो सभो-सोसाइटीक नहि छी
ने ई बात साहित्यपर चर्चा
उपचर्चाक छी
ई बात हमरा भनसाघरक छी
जतुका ओझराहटि
कहियो नहि समाप्त होइत अछि
कखनो नहि समाप्त होइत अछि

भोरे जे उठैत छी पाँच बजे
से रातुक दसो बजे धरि
कहाँ फरियाइए कोनो काज
कयले काजकेँ करैत रहू बेर-बेर
मैंञा कहथिन– ई पेट छी पेनकट्टा कोठी
कखनो नहि भरैए
एहि पेनकट्टा कोठीक

भरबाक उपक्रममे
राति सुतैत छी
दिनक चिन्तामे
आ दिन-रातिक चिन्ता करैत
कोना निकलि जाइए
पते नहि चलैए
कियो कहता
करैला नहि खायब
आलू चाही
कियो कहता
आलू नहि खायब
करैला चाही
किनको-किनको तऽ
आलू आ करैला
किछु नहि चाही
ओ अगबे परोड़क
भुजिया खेताह
तेलमे छानल
किनको-किनको तऽ
आलू-परोड़-करैला-कटहर
सभटा चाही
एके थारीमे

किनको रोटी मोट लगै छनि
किनको रोटी पातर
किनको तरकारी करू लगै छनि
किनको चीनी सन मीठ
कियो कहता दालि अनोन छै
कियो कहता नोनगर
किनको तेल-मशाला चाही

कियो खेताह सादा
एहि सभ ओझराहटिकेँ
सोझरबैत-सोझरबैत
भोरको चाह
सराकऽ पानि भऽ जाइए
आ ओहो पानि की बैसिकऽ पीबै छी
एक हाथमे कप रहैए
दोसर हाथमे छोलनी!

दहशतिमे छौड़ी

बात एखुनके छी
लगभग पाँच पैंतालिसक
जखन हम दीघासँ
आशियाना वला टेम्पू
पकड़ने रही
टेम्पूमे पसीन्जर भरितहि छल
तामे एकटा छौड़ाकेँ देखलहुँ
ओतहि रोडक कातमे
एकटा छौड़ी संग
जबर्दस्ती करैत
ओकर बैग खींचैत
ओकर गट्टा पकड़ैत
ओकरा विभिन्न तरहक उपद्रवसँ
दहशतिमे अनैत

छौड़ी बहुत प्रयास कयलक
बात ओकरे धरि समटल रही जाइ
मुदा बातकेँ बेसम्हार होइमे
समय कहाँ लगलै
अंततः छौड़ीकेँ
आवाज देमय पड़लै
लोक एबो कयल
आ छौड़ाकेँ खूब डेंगेबो कयलक
आब छौड़ी मुक्त भऽ
हमरा बगलमे बैसल अछि
ओकरो जयबाक छै

आशियाने रोड
धरि छौड़ीक सम्पूर्ण अस्तित्वपर
पसरल छै एकटा दहशति
जकर आहटि
हमरा कान धरि सुना रहल अछि
विभत्स दृश्य
हमरा आँखिमे देखा रहल अछि
छौड़ी बेर-बेर
फोन लगा रहलैए
अपन मायकेँ
अपन पिताकेँ
अपन अरिजन-परिजन
जे जतय छै तकरा

किछु क्षणक लेल
हम आबि जाइत छी
छौड़ीक जगहपर
आ हमर हार्ट बीट बढ़य लगैए
एक सए अस्सी
एक सए नब्बे
दू सए पार
चारूभर अन्हारे-अन्हार
हे भगवती रक्षा करू
आब सभ किछु
अहींक हाथ

हम चन्द्रमा पर जाइ
हम मंगल पर जाइ
हम विश्वगुरु बनि जाइ
जमा कऽ ली दस-बीस सालक

खाद्य भंडार
धरि तैयो सुरक्षित रहि जायत
एहि देशमे छौड़ी
से सुनिश्चित एखनो
कहल नहि जा सकैए
चारूभर शासन-प्रशासनकेँ रहितहुँ
छौड़ीक भविष्य
दावे पर लागल रहत
जहिना बीच सभामे
दावपर लागल रहै
द्रौपदीक इज्जति!

कुमारी निराशा

ओना तऽ जीवनमे
बहुत दुःख देखलहुँ
आरो कतेक दुःख
देखबाक अछि आगू
सेहो नहि पता हमरा
धरि अपनो दुःखसँ भारी
लगैए दोसरक दुःख
आ ओ दुःख
तोड़य लगैय भीतरसँ
लाख चाहैत छी
''सुख-दुःख समानि च''
गीताक एहि पाँतीकेँ
हृदयगत कऽ ली
से नहि भऽ पबैए संभव

काल्हिसँ मथने अछि
हृदयकेँ
कुमारी निराशाक दुःख
बेर-बेर सोचयपर
विवश भऽ जाइत छी
एहि नामकेँ लऽकेँ
कहू केहन लगैत हेतै ओकरा
जखन कियो आवाज दैत हेतै
निराशाक नामसँ
जीवनमे आशा-निराशा तऽ
लगले रहैत छै

धरि जखन सम्पूर्ण अस्तित्व पर
निराशाक टैग
लगा देल जाइ
तऽ ओ वेदना
असह्य होइत अछि
जहिना असह्य होइत होयत
एकटा निरीह जीव लेल
दगनीसँ दगेलाक बादक वेदना
माय-बाप जे अन्याय कयलक
एहि नामकेँ राखि
से तऽ कयबे केलक
समाज की मूक-बहीर छल
जकरा कोनो अन्तर नहि पड़लै
एहन नाम सुनिकऽ
आ शिक्षण संस्थान
जतय पहिल बेर
एकटा नाम लऽकेँ
एकटा पहिचानक लेल
उपस्थित भेल होयत
ओ छौड़ी
तऽ कोनो प्रतिक्रिया
नहि भेल होयत कतहुसँ
कियो नहि कहने होयत
ई नाम अपना आपमे
एकटा सजा छी
कोनो निरपराध छौड़ीक लेल

बहुत रास प्रश्न
गोल-गोल घुमि रहल अछि माथमे
जकर उत्तर चाहैत छी

धरि प्रश्न अनुत्तरिते रहत
ईहो हम जनैत छी
हम तऽ ईहो जनैत छी
जँ जन्मसँ पूर्व
इच्छा पूछल जैत
कुमारी निराशासँ
तऽ एकदम्मे ओ नकारि दइतऽ
ओहि घर आ ओहि समाजमे
जन्म लेबासँ
जे ओकर सम्मान नहि कऽ पाओल
जकरा ओकरा सम्मानक
कोनो चिन्ता नहि छलै!

दुर्दशा

एक दिन
एक राति
की पड़ल रहलहुँ
बोखारमे
दुर्दशा-दुर्दशा भेल अछि
भनसाघरक हाल

जरिकऽ खकस्याह भेल अछि तव
जरल-झड़कल रोटी
नूनक डाक तरकारी
दूध उधियाकऽ खसल चारूकात
ताहिपर सोहरल चुट्टीक हेंज
चायमे चीनी
आ पत्तीक मात्रा असीमित
कतौ अल्लुक खोंइचा फेकल
कतौ पिआजुक खपलोइया उड़ैत
कतौ नोन हेरायल
तऽ कतौ हरदि, कतौ धनियाँ
तऽ कतौ तेल-मरचाइ

सभ मिलाकऽ कही जे
अराजताक स्थिति
अछि पसरल सम्पूर्णो भनसाघरमे
एक दिन
एक रातिमे
जकर स्थिरता आ सुव्यवस्थामे
सालो लगा देलहुँ जीवनक।

पतिव्रता

पहिने पतिव्रता हेबाक लेल
बर-बर कठिन परीक्षा
देमय पड़ैत छलै स्त्रीकेँ
तखन जाकऽ भेटै छलै
सएमे सए अंक
दर्ज होइत छलै
इतिहासमे नाम
वर्तमान तऽ दुखे भोगैत
बीतैत छलै

कखनो काँट-कूशपर
चलय पड़ैत छलै
कखनो आगिमे
तपय पड़ैत छलै
कखनो चोर-उचक्काक हाथेँ
अपहृत होमय पड़ैत छलै
कखनो कामी-व्यभिचारी
पुरुषक हाथेँ
अपन मान-सम्मान
गमबय पड़ैत छलै
कखनो बिन अपराधे
त्यागि देल जाइत छल
पति-परिवारक हाथेँ
आ जीबय पड़ैत छलै
अपमानित जीवन
कखनो असगरे

तऽ कखनो अपन बाल-बच्चोक भार
अपना कान्हपर उठौने
कखनो-कखनो तऽ
पतिव्रता हेबाक लेल
जरय पड़ैत छलै
जीबितहिं चितामे
मुइल पतिक संगे
आब समय बदलल
सोचो आ परिभाषो
आब पतिव्रता हेबाक लेल
उपर्युक्त एकोटा परीक्षा देब
अनिवार्य तऽ नहियें
सामान्यो नहि कहि सकैत छी
आब पतिव्रता हेबाक लेल
पतिक संग रहब
एतबे अछि जरूरी
पतिक घर-परिवारकेँ
अपन घर-परिवार मानि
जँ जीवन निमाहि लेलहुँ
तऽ बुझू सएमे सए अंक
इतिहासक तऽ पता नहि
वर्तमानक पृष्ठपर
जरूर रहत नाम
लोक उदाहरण देत
फल्लांक बहु एहन पतिव्रता
एहन व्यापक

पुरुष तऽ मानवीय सभ्यताक
शुरूआतेसँ बदलल अछि
आब स्त्रियो बदलि रहल अछि

एकरा कोनो बेजाइयो बात
नहि कहि सकैत छी
समयक संग-संग
जे नहि चलैए
से या तऽ टूटि जाइए
या पाछू छूटि जाइए।

हमर नेनपन

बात आइसँ
लगभग पैंसीस साल पुरनका छी
जहिया हम नेना रही
लगभग दस सालक
जहियासँ बात सभ
हमरा मोन रहय लागल
ओहिसँ पहिलुका बात
हमरा तेना जकाँ
मोन नहि अछि
कही जे मोने नहि अछि किछु
बड़ मोन पाड़ैत छी तऽ
धुँधला-धुँधला सन
एकटा गोर-नारि
छौड़ी मोन पड़ैए
जे हमरा कोरामे उठा
घुमल घुरैत छल
एहि अँगनासँ
ओहि अँगना

माइये मुँहे सुनलहुँ
जे हमर एकटा
बहिनो छल
जकर नाम छल सुधीरा
जे हमरा ज्ञान-परानसँ पहिने
असमय चलि गेल
एहि दुनियाँसँ दूर
डाक्टरक अभावमे

दबाइक अभावमे
हौस्पीटलक अभावमे
दुइये-चारिटा रद्द-दस्तक उपरान्त
ओहि दिनसँ सोचैत छी
जँ हमरा लग पाइ रहितय
तऽ एकटा नीक हौस्पीटल
बनबितहुँ अपना गाममे
जे कि नहि हैत
से हम जनैत छी
इच्छा-बेगरता आ पूर्तिक बीच
अन्तर रहलैए सदैव
आ से रहतै आगुओ

से हम अपन
नेनपन दऽ जे कहय लगलहुँ
से कोनो एहन रोमांच
कतहु नहि देखाइए हमरा
जकरा हम मोन पाड़ी
आ प्रफुल्लित भऽ उठी
आइ जखन नेना सभकेँ देखैत छी
तऽ लगैए केहन विकट दिन
देखने छी हम सभ
नहि नीक वस्त्र
नहि नीक रहन-सहन
नहि परिवेश तेहन नीक
नहि स्कूल-कॉलेजक
समुचित व्यवस्था

विकासक नामपर
गाममे खरंजा लेल ईंटा
खसेने रहय सरकार

जकरा राता-राती लोक
खूब चोरैने रहय
पहिले पहिल ईंटा जे देखने रहय
एहिसँ पहिने गाममे
ईंटा नहि खसल रहै
से बात नहि छै
खसलो रहै आ बनलो रहै
बड़का बाबू लोकनिक घर
जतय धरि
छोटका बाबू-भैयाक पहुँच
नहिक बराबरि छलनि
कही जे दूरेसँ देखिकऽ
नयन जुरबैत छलाह
से ईंटा जहन
आम लोकक समक्ष आयल
तऽ सोना जकाँ ओकर तस्करी
स्वभाविके छल
आ गछबामे हमरा
कोनो हर्ज नहि बुझना जाइए
जे कोठीक पेन तर देबाक लेल
मैंञा खातिर हमहुँ
दू-चारिटा ईंटा
उठेने रही
ठेकेदार सभक नजरि बचाकऽ
दिने-देखार

एक बेर तऽ एना भेल
जे डिबिया लग पढ़बा काल
बीच माथक
केसे जरि गेल रहय

जकरा लेल माय
बहुत चिन्तित भेल रहय
कहय बीच माथक केस जरब
शुभ नहि मानल जाइत अछि

एहन बात नहि रहय
जे लालटेन नहि रहय घरमे
लालटेन रहय दू-दूटा
धरि हर चारि दिनपर
मँजबाक काल
लालटेनक शीशा
फुटि जाइ मायसँ
आ ओहि दिनमे
चारि टकामे एकटा शीशा
आबय दोकानमे
आ चारि टका सभ दिन हाथमे
रहबो नहि करय लोककेँ
फोड़-चूड़मे मायकेँ मैंञा
पारंगत बुझथि
तकर कारणो रहय
माटिक तौलामे भात बनय
आ माटिक कराहीमे दालियो
जे अक्सरहाँ मायसँ
फुटि जाइ
बासन तऽ फुटबे करय
जे पानियो चुल्हेमे हेरा जाइ
जाहिसँ आँच-भाफ
सभ मिझा जाइ
फेर तीतल चुल्हाकेँ
पजारबा काल

जे आँखिसँ नोर खसय मायकेँ
से एखनो झलकैए
हमरा आँखिमे ओहिना

तैयो कहब जे
हमर नेनपनमे
किछु नहि छल
तऽ ओ झूठ होयत
सभसँ पैघ आ सत बात
ई अछि जे हमर नेनपनमे
हमर मैंञाँ छलीह
हमर पिता छलाह
हमर माय छल
हमर भाइ छल
हमर संगी-सहेली छल
जे सभ हमरासँ
बहुत प्रेम करैत छल
जे हमर भावना
संवेदनाकेँ बुझैत छल
जकर अभाव हमरा
खटकैए आइ
जखन ओहिमेसँ
अधिकांश लोक
चाहे तऽ कालकवलित भऽ गेल
वा जे किछु
बचलो अछि तऽ हमरे जकाँ
अपन-अपन पारिवारिक
ओझराहटिमे
ओझरायल अछि
दूर देश-परदेशमे!

निमेरा

दुनियाँ कतयसँ कतय गेल
कही जे चन्द्रमोसँ ऊपर
सूर्य धरिक यात्रा तय करबाक लेल
धरि एखनो मिथिलाक
अनेक माय-बाप
अनेक घर-परिवार बेटीक निमेरे करैमे
लागल अछि
अपन आर्थिक स्थितिसँ ऊपर
दान-दहेज दऽकेँ ऋणो-पैंच लऽकेँ
बियाहि देमय चाहैत अछि
अपनासँ ऊपर घर
अपनासँ पैघ बर

बियाह नहि हो
मानू जे गयाक पिण्डदान हो
पिण्डदान दियौ
आत्मसंतुष्टि लिय
पितर मुक्त भऽ गेल हेताह
जतय कतहु अटकल हेतनि
हुनक आत्मा
जाहि कोनो कारणेँ
नहि प्राप्त भेल हेतनि हुनका मुक्ति
एकटा पिण्डदाने
एहि लोक
सभसँ मुक्त

हम मनैत छी

बहुत विकास भेल अछि
स्त्रीक जीवनमे
से जँ नहि भेल रहितय
तऽ हम एहि तरहेँ
सार्वजनिक मंच पर
समाजक एहि विश्राप विडम्बनापर
एहि तरहेँ खुल्लम-खुल्ला
कविता नहि लिखि पबितहुँ
बैसल रहितहुँ
घरक कोनो कोनमे
प्रार्थनारत भेल– तमसो मा ज्योतिर्गमय'' करैत

मुदा आत्मा कूही भऽ-भऽ
कनैत अछि तखन
जखन देखैत छी
एहि निमेराक फेरामे
अनेक बेटीक जीवन
विनष्ट होइत
स्कूल-कॉलेजक जगहपर
सासुर-नैहर करैत
परिवारिक पैघ जिम्मेदारीक भार तर
छटपटाइत-कछमछाइत
आ सभसँ दुखद स्थिति तऽ
तखन बुझना जाइत अछि हमरा
जखन दुर्भाग्यसँ कोनो बेटी
नहि नैहरक रहि जाइत अछि
आ नहि सासुरक
उपेक्षित-अनाथ भेल
बीच मझधारमे
ओकरा छोड़ि देल जाइत अछि
दुनू तरफसँ!

मोन आब मायासँ मुक्त अछि

पहिने अहाँ
फोन नहि करैत छलहुँ
तऽ दुख होइत छल

पहिने अहाँ
हमर उपेक्षा करैत छलहुँ
तऽ दुख होइत छल

पहिने अहाँ
अपन सुख-दुःखमे
हमरा शामिल नहि करैत छलहुँ
तऽ दुख होइत छल

पहिने हमर मोन
नित दिन
अहाँक प्रतीक्षा करैत छल
होइत छलै एकरा
देरो-सवेर
अहाँ घुरब घर अवश्य

धरि आब हमर मोन
नहि अहाँक
प्रतीक्षा करैत अछि
नहि अहाँक
कोनो बातक दुःख
सत पुछी तऽ
हमर मोन
आब अहाँसँ
प्रेम नहि करैत अछि
तेँ प्रतिक्रिया नदारदे रहैत अछि।

चरणामृत

देव! हमरा स्वीकार्य नहि
अहाँक चरणामृत
आ नहि एहि लेल
हमरा मोनमे अछि
समर्पणक एहन कोनो भाव
कि शिरोधार्य कऽ ली एकरा

केहनो उच्चासन पर
विराजमान होइ अहाँ
कतबो जल-फूलसँ-पूजित
धूप-दीप-नैवेद्यक
भले लागि जाउ पथार
घंट-घड़ीघंट
पाँचजन्य शंखसँ
दिग्-दिगन्त हो गुंजित
हमर मोन नहि मानत
माथ नहि झुकत
अहाँक पूजा
आराधना लेल

हम जनैत छी
अहाँक सभ सत्य
सभ महानताक पाछू
छुपल अहाँक दरिद्रता
हत्था कि गोटी
गोटी नहि हत्था

खूब खेलेने छी
नेनहिमे हमहुँ ई खेल

देव! प्रातःस्मरणीय
हम ने अहिल्या
कुंती ने तारा
हम सामान्य स्त्री
रातुक चिन्तामे
दिन कटैत
आ राति बीति जाइत अछि
दिनक मादे
सोचैत-सोचैत

पेट भरि अन्न
देह भरि वस्त्र
जकर आभूषण
ओढ़न-पहिरन
से की जानऽ गेल
राजसी ठाठ-बाटक बात
जे सभ देव-पितरसँ ऊपर
रखैत अछि
अपन सन्तानकेँ
जे सभ राजपाटसँ पैघ
बुझैत अछि
अपन मानकेँ
ओकरा लेल
एहि चरणामृतक कोन महत्त्व
कोन आवश्यकता

देव! अहाँक देवत्व

अहींकेँ समर्पण
अहाँक चरणामृत
अहीकेँ अर्पण
हम मिथिलाक
एकटा सामान्य स्त्री
सामान्ये रहन-सहनमे
तृप्त रहनिहारि
गीता पर
हाथ राखिकऽ
कहि रहल छी
हम जे कहब
से सत्ते कहब
झूठ नहि कहब
भलेहिं मंदिरमे
विराजित होइ
अहाँ भगवान नहि छी
जे चरणामृत पीबय लोक
अमृत तऽ दूर
ओ शुद्धो जल नहि छी
जेहो पीबाक जोग
पीताम्बरी परिपेष्टित
हो काया अहाँक
धरि भीतरमे
दाग अछि लागल
भलेहिं लोकक
आँखिसँ
होइ ओझल ओ
हमरासँ
अदृश्य नहि!

कामना

प्रिये! जखन-कखनो
हम पुछैत छी
अहाँसँ
कि अहाँक हृदयमे
हमरा लेल स्थान अछि
अहाँ हमरासँ प्रेम करैत छी?

अहाँ धरसँ बाजि उठै छी
अरे, अहाँ लेल हमरा हृदयमे
जँ स्थान नहि रहत
तऽ ककरा लेल रहत
अहाँसँ जँ हम प्रेम नहि करब
तऽ ककरासँ करब
देखै छी अहाँ सिवा
हमरा जीवनमे
आर कियो अछि

सरिपहुँ हमरा सिवा
अहाँक जीवनमे
कहाँ अछि कियो
''जैसे उड़ि जहाज को पंछी
फिर जहाज पर आबै'' सन
अहाँ हारि-थाकिकऽ
घुमैत छी हमरे इर्द-गिर्द
मुदा एकक सिवा
दोसरक नहि रहब मात्र

प्रेम छी तऽ एहन प्रेमकेँ
नहि स्वीकारैत अछि मोन
मोनक भीतर
जे कामना अछि
ओ कखनो एक पर अंत
आ कखनो-कखनो
अनन्तो पर अन्त नहि ओकर

कएक बेर
अहाँक हृदय-पुष्करणीमे पैसि
स्नान-ध्यान करैत छी
अथाह जलक मध्य
अपनाकेँ तकैत छी
मुदा कतहुसँ
किछु नहि अबैत अछि हाथ
सेमारमे लटपटाइत-उबडुबाइत
आबि जाइत छी ऊपर
हाँ हन्त! हमर अभाग
अहाँक नहि दोष

प्रिये! प्रेम लोक
करैत नहि अछि
भऽ जाइत छै
जकर मादक सुगन्धि
मोन-प्राणकेँ स्पर्श करैत
छिड़िया जाइत छै
पारिजातक फूल सन
अपनहि एम्हर-ओम्हर
प्रिये! एहि स्पर्शसँ
वंचित अछि हमर आत्मा

एखन धरि
जकरा लगैत छै
हर आहटि पर
अहाँ आबि रहल छी
प्रेमक फुलबाड़ीमे फुलायल
रजनीगंधा सन
अलराइत-मलराइत
जकर सुगन्धि
दूर-दूर तक पसरैत छै
पूर्वा-पछबा बसात संग

प्रिये! सत्त पूछी तऽ
अहाँक हृदयमे
हमरा लेल प्रेम नहि
द्वेष रहल सभ दिन
अहाँक पुरुषत्व
ललकारैत रहल सभ दिन
हमरा स्त्रीत्वकेँ
दाँव पर लगा
ककरो प्रेम प्राप्त करब
हमर अभीष्ट नहि प्रिये
स्व ने प्राप्त करत
परकेँ
जँ स्व समाप्त भऽ जायत
तऽ परक प्राप्ति
केहन आ ककरा लेल!

साक्षी

हे! चंद्रदेव
अहाँ साक्षी रहब
एहि बातक
कि अहींक छत्रछायामे ठाढ़ भऽ
हम किनलहुँ माछ
हुनका लेल
वैष्णव रहितहुँ

हे! वरुण देव
अहाँ साक्षी रहब
एहि बातक
कि अहींक सहयोगसँ
धोइ-पखारि माछ
रखलहुँ हुनका लेल
वैष्णव रहितहुँ

हे! अग्निदेव
अहाँ साक्षी रहब
एहि बातक
कि अहींक तेजसँ
हम रन्हलहुँ माछ
हुनका लेल
वैष्णव रहितहुँ

हे! प्रिये
अहाँ साक्षी रहब

अहाँ मोन राखब
हमर प्रेम आ समर्पणकेँ
कि अहींक खातिर
हम बजारसँ माछ अनलहुँ
ओकरा रन्हलहुँ-पकेलहुँ
आ सप्रेम थारीमे परोसि
आगूमे बैसि
खुआ रहल छी अहाँकेँ
वैष्णव रहितहुँ!

विषकुंभ पयोमुखम्

एकोरत्ती
विश्वास कहाँ भऽ रहलए
कि अहाँ नहि छी
हमरा जीवनमे
हमरा अगल-बगलमे
दूरो धरि कतहु
जतयसँ अहाँक
परछाहियो देखा पड़य हमरा

जखन-कखनो सोचै छी
तऽ बड़ तामस चढ़ैए
अपना आप पर हमरा
आखिर एतेक अंधविश्वासी
कियै भऽ गेलहुँ हम
अहाँकेँ लऽ कऽ
कि अहाँक वास्तविक रूप
समक्ष रहितहुँ
नहि देखि सकलहुँ
जतय छलकेँ सिवा
किछु छलहे नहि
अहाँ लग
हमरा देबाक लेल

कतेक नासमझ छलहुँ हम
कि अहाँक हृदयमे
अपना लेल प्रेम
आ अहाँक भावनामे

अपना लेल सम्मान
तकैत रहलहुँ सदैव
विषकुम्भ पयोमुखम् सन
अहाँक शहद मिश्रित बात
हमरा आकृष्ट करैत गेल
अहाँ दिस सदैव

हम ई बात बिसरि गेलहुँ
अहाँ पुरुष छी
एक फूल
आ एक डारि पर
कहाँ टिकैत अछि
अहाँक मोन
अहाँ तऽ नव-नव परागक
अनुगामी रहलहुँ सदैव
जतय प्रेम आ परित्याग सन
शब्दक अर्थ
अपने भऽ जाइत अछि
महत्त्वहीन

हम स्त्री
धरती जकाँ
सभ भार-कुभारकेँ
अपना माथ पर उठबै वाली
साधारणोसँ
अति साधारण जीव
जे एखनो
दोसरक भावनाक
सम्मान लेल
जान तक
दऽ दैत अछि
हँसैत-हँसैत!

फैशन

मैंञा फाटल नूआकेँ
तामे तक सिबैत रहैत छलीह
जामे तक ओ
सीबा जोग रहैत छल
जखन सीबा जोग
नहि रहैत छल
तऽ चेफड़ी साटि-साटि
नूआमे पहिरैत छलीह
होइत छलनि
कतहु कोनो अंग
उघार नहि रहय
चिन्ता एहिओ बातक
कि लोक की कहत
आ लोक तऽ लोक
अपनो मोन कहाँ मानैत छलनि

काकी मायकेँ मैंञा
धनाभावमे सभ दिन
मधेपुरसँ कटपीसक साड़ी
आनिकऽ देलखिन
मुदा उघार नहि रहय देलखिन देह
लोक देखत तऽ की कहत
ताहि दिनमे
उघार देह
नीक नहि मानल जाइत छल
उघार होइत छल

दोसर लग
मात्र नगरवधुए
किछु पेटक खातिर
किछु कुव्यवस्थाक कारणेँ

आइ रिंकी-टिंकी
टीना-मीना साबूतो वस्त्रकेँ
फाड़िकऽ पहिरैत अछि
सीना तानिकऽ
बीच बाजारमे घुमैत अछि
सभा-सोसाइटीमे
दैत अछि
पैघ-पैघ भाषण
गंगा-यमुनामे
करैत अछि
पूजा-अर्चना
बिना कोनो आत्मग्लानिकेँ
जे मैंञा माय काकीक लेल
काल्हि मर्यादा छलनि
ओ रिंकी-टिंकी लेल
आइ फैशन छी।

मन

कखनो-कखनो
अहाँ लेल
मनमे
बहुत प्रेम उपजैए
कखनो-कखनो
अहाँ लेल
मनमे
बहुत घृणा

जखन प्रेम उपजैए
होइए संसारक
सभसँ नीक
जे किछु अछि
अहाँकेँ
समर्पित कऽ दी
जखन घृणा उपजैए
तऽ होइए
संसारमे
जे किछु
नीक अछि
ओहि सभसँ
अहाँ वंचित
भऽ जाइ

एना कियै होइत अछि
की मोनक गति

सभ दिन
एक रंग
नहि रहैत अछि
जँ मोनक गति
एक रंग रहितय
तऽ कतेक नीक होइतय

हम अहाँ
सभ दिन
सभ लेल
नीके सोचितहुँ
सभ दिन
सभ लेल
नीके करितहुँ
तखन मात्र
प्रेमे-प्रेम
रहितय जीवनमे
ने ईर्ष्या
ने द्वेष।

खण्ड-खण्डमे बाँटल स्त्री

स्त्रीक अपराध की?
एतबहि ने
कि ओ प्रेम करैत अछि
ओ प्रेम चाहैत अछि
ओ विश्वास करैत अछि
विश्वास चाहैत अछि
ओ समर्पित करैत अछि
अपन तन-मन
ओ समर्पण चाहैत अछि
दोसरोक तन-मन

स्त्रीक अपराध की?
एतबहि ने
कि ओ प्रेम केनाइ
नहि छोड़ैत अछि
खण्ड-खण्डमे बँटलाक बादो
ओ विश्वास करितहि अछि
अपना संग
विश्वासघात
भेलाक बादो
ओ समर्पित करितहि अछि
अपन तन-मन
बुट्टी-बुट्टीमे
नोचेलाक बादो

स्त्री जाहि दिन

छोड़ि देत
प्रेम करब
विश्वास करब
ताहि दिन
बिगड़ि जायत
संसारक सम्पूर्ण व्यवस्था
जे सहस्त्रमुखी धार बनि
छिड़िया जायत
एम्हर-ओम्हर
जकरा समेटब
बान्हिकऽ राखब
कठिन हैत
बहुत कठिन हैत!

पुनर्विवाह

जँ आइ-काल्हि जकाँ
पुनर्विवाहक प्रथा रहितय
ताहि दिनमे
तऽ बाल-विधवे
नहि मरतथि
महिनाम वाली मैंञा
हुनको अपन घरवला होइतनि
परिवार बैसितनि
नौ महिना बच्चाकेँ
पेटमे रखितथि
ओकरा जन्म दऽ
कहबितथि ओकर माय
सिनेह भावसँ
ओकर लालन-पालन कऽ
सुरक्षित करितथि
अपन आगूक भविष्य

से तऽ नहि छल
ताहि दिनमे पुनर्विवाहक प्रथा
तेँ ने नौ सालमे
बियाह भेलनि
एगारहमे द्विरागमन
आ चौदह पुरैत-पुरैत
भऽ गेलीह बाल-विधवा
एम्हर बसंत चढ़ल आ
ओम्हर पतझड़ आबि गेल

जीवन भरिक लेल

माय-बापक दुलारू बेटी
एतेक भारी
विपत्तिक दिन
असगरे कोना कटितथि
से नैहरे आनल गेलीह
जीवन भरिक लेल
जीवन बितेबाक लेल

महिनाम वाली
मैंञाक चरित्र पर
नहि उठेलक कियो आँगुर
जखन कखनो चरित्र-चित्रण
कयल गेल
पाक-साफ देखेलीह
सीता आ सावित्री जकाँ
इतिहास-प्रसिद्ध
स्त्री-रूपेँ
जकर उदाहरण
दैत अछि लोक आइयो

तीर्थ-वर्थ
पूजा-पाठ
काज-परोजन
गीत-नाद
गाम-घर
सभ तरहें
सभ जगह फिट
कतहुसँ कोनो दाग नहि
ककरोसँ कोनो

आपत्ति नहि
श्वेत वस्त्र आ चाननसँ
चमकैत ललाट
गरदनिमे दू धारीक कंठी
हाथमे तुलसीक माला
राम-राम करैत
बितलनि जीवन

ई तऽ बाहरी रूप छल
महिनाम वाली मैंञाक
जे सभकेँ
नजरि अबैत छल
मुदा एकटा आंतरिको
रूप तऽ हेतनि अवश्य
मनुख हेबाक कारणे
जहिना सभक होइत अछि
इच्छा-आकांक्षा-लालसा
एहि सभसँ दूर
तऽ सामान्य मनुख
नहि भऽ सकैत अछि किन्नहुँ
से तऽ हुनकामे
हेबे करतनि
जे असमय कालकवलित भेल
हुनक पतिक संग-संग
जरिकऽ राख भऽ गेल
जकरा पर
ककरो नजरि
नहि गेल
जकरा मादे
कियो नहि पुछलक हुनकासँ!

वैध सन्तान

झूठे जे कहब
समय नहि बदललै
से बात नहि छै
समय बदललै अछि अवश्य
एकटा समय रहै
कि जातिवादी
व्यवस्थाक तहत
अक्का दलित परित्रासित स्त्री भऽ
मारल गेलीह
पारामार दवाइ खुआकेँ
प्राकृतिक गुण-धर्मक तहत
गर्भवती भऽकेँ
ब्राह्मण उच्चवर्गक
बाबू-भैयाक हाथेँ
आ विरोधक स्वर
कतहुसँ नहि उठल
समाजमे
कियो नहि आह
व्यक्त केलनि
जे ब्राह्मणी आह व्यक्तो केलनि
से अपने घरक पुरुषक
नजरि बचाकऽ
आ द्रवितावस्थामे जे नोर
आँखिसँ बहबो केलनि
तकरा अपनहि आँचरसँ
पोछबो केलीह

स्त्री हेबाक कारणे
स्त्रीक दुःख-दर्द पर

मुदा आइ
दलित रहितहुँ
दलितक बेटी रामरेखा
बियाहल गेलीह
साधिकार ब्राह्मणक बेटासँ
ओही प्राकृतिक गुण-धर्मक तहत
ब्राह्मणक बेटा द्वारा
गर्भवती भेलाक उपरांत
आ कतहुसँ
कोनो लाठी
नहि निकलल
कोनो तरहक कियो
विरोध नहि केलक
कही जे विरोध करबाक
जे जातिगत दंभ
बाँचल छल ब्राह्मणमे
से लगभग-लगभग
समाप्त होमय जा रहल अछि

झूठे जे कहब
समय नहि बदलल अछि
से बात नहि छै
समय बदलल अछि अवश्य
आब रामरेखा
मान-सम्मानसँ
कोबर-माँड़ल बैसलीह अछि
नैहर-सासुर केलीह अछि

काल्हि ससम्मान जन्म लेतनि
हुनक सन्तान
आ आइ-माइ गओतीह
सोहर-खेलौना
नेना आब
अवैध सन्तान नहि
वैध सन्तान कहाओत
ओकर एकटा नाम हेतै
ओकर अपन पहिचान हेतै।

अतीत होइत माय

पनचानबे सालक माय
जीबितहि अतीत भऽ गेलीह
आब हुनक होयब या नहि होबयक
कोनो अर्थ नहि अछि घरमे
ओ घरक अन्य वस्तु जकाँ
पड़ल रहैत छथि
घरक कोनो कोनमे
पाँच कओर अन्न
पाँच हाथक वस्त्र
कहुना आबि रहल छनि आगू
एहि बातक धन्यवाद
ओ मोने-मोन
करैत छथि गोविन्दकेँ

परिवार कोनो छोट नहि छनि
पाँचटा संतान
दसटा नाति-नातिन
पुतोहु-जमाय
गानय बैसतीह तऽ
कतेक ने हेतनि
मुदा हुनका लेल कियो नहि
सभक अपन-अपन जीवन छै
अपन-अपन कार्य छै
कियो हुनका ओगरिकऽ बैसितनि
से कहाँ छै फुरसति ककरो
आ हुनके ओगरने जीवन चलतै

परिवारोकेँ तऽ अपन परिवार छै
ओकरो प्रति तऽ कर्तव्य छै
एककेँ पकड़बाक चक्करमे
दोसरकेँ छोड़ल नहि ने जा सकैए

मायकेँ मोन पड़ैत छनि
अपन समय
जखन कौआ कओर, मैना कओर
पड़बा कओर कऽकेँ
खुआबथि एक-एक कओर
नेना सभकेँ
आ जखन कतहु जाथि
देवस्थान तऽ माँगथि
—'हे भगवान बच्चा सभकेँ दीर्घायु करब'
आब वैह बच्चा सभ
हुनक एक कओर भात
दू टा रोटी लेल
कटाउझ करैए
आ मोने-मोन मँगैए वरदान
—'हे भगवान, एहि बुढ़ियाकेँ
जल्दीसँ ल जाउ
जे जान फारकति हैत!'